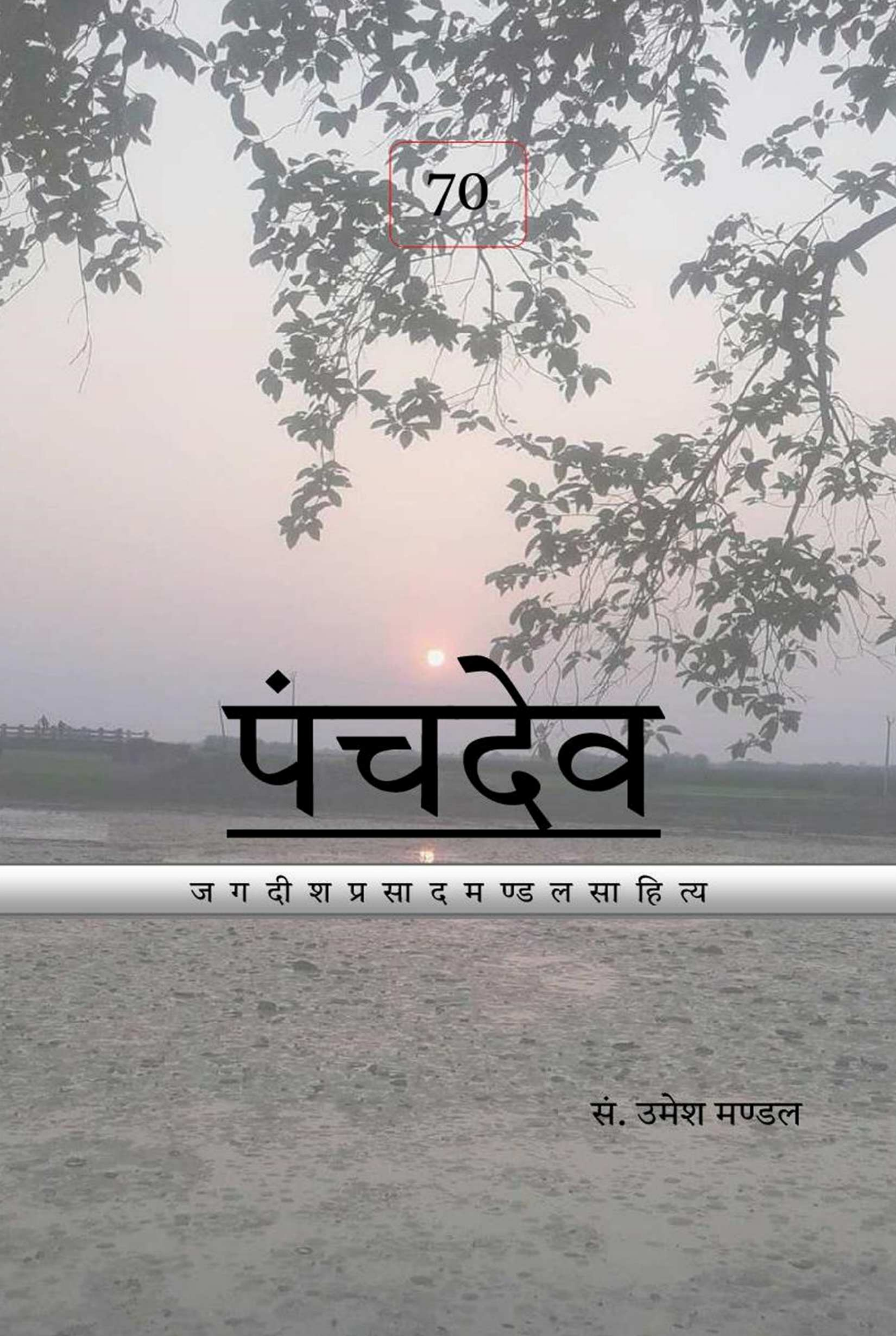


70

पंचदेव

जगदीश प्रसाद मण्डल साहित्य

सं. उमेश मण्डल

पंचदेव

पंचदेव

(जगदीश प्रसाद मण्डल साहित्य)

सं. उमेश मण्डल

पल्लवी प्रकाशन

निर्मली

ISBN : 978-93-88421-47-8

दाम : ₹50/-

पहिल संस्करण : 2018

प्रकाशक : पल्लवी प्रकाशन
तुलसी भवन, जे.एल.नेहरू मार्ग, वार्ड नं. 06, निर्मली, जिला- सुपौल,
बिहार : 847452

वेबसाइट : http://pallavipublication.blogspot.com
ई-मेल : pallavi.publication.nirmali@gmail.com
मोबाइल : 8539043668, 9931654742

प्रिन्ट : मानव आर्ट, निर्मली (सुपौल)
आवरण : श्रीमती पुनम मण्डल, निर्मली (सुपौल) बिहार : 847452

PANCHDEO : 70
Compilation by Umesh Mandal of Select Maithili Stories of Shri. Jagdish Prasad Mandal.

दू शब्द

पाँच गोट कथाक सङ्कलन, तँए पोथीक नाओं 'पंचदेव' राखल गेल अछि। 'पंचदेव'क एकसाए संग्रह अछि जे एकसंग प्रकाशित भऽ रहल अछि। साएओ संग्रहक कथा सभ श्री जगदीश प्रसाद मण्डलक कथा-संसारसँ सङ्कलित कएल गेल अछि। मण्डलजी मैथिली-मिथिलाक ओहन रचनाकार छैथ, जनिक रचनामे वर्त्तमान अछि, यथार्थ अछि। तँए, भाषा-साहित्यक दुनियाँमे मण्डलजीकेँ सभठाम जानल-मानल जा रहल अछि।

मैथिली साहित्यमे उत्कृष्ट रचना तथा जीवन्त भाषाक प्रयोग हेतु मैथिली साहित्यक एकल अन्तर्राष्ट्रीय पुरस्कार- 'टैगोर लिटिरेचर एवार्ड' श्री जगदीश प्रसाद मण्डलेजीकेँ प्रदान कएल गेलैन। तैसंग 'यात्री सम्मान', 'विदेह सम्मान', 'विदेह भाषा सम्मान', 'विदेह बाल-साहित्य पुरस्कार', 'वैदेह सम्मान', तथा 'कौशिकी साहित्य सम्मान'सँ सेहो सम्मानित छैथ। श्री जगदीश प्रसाद मण्डलजीक आइ धरिक (4 अक्टुबर 2018) कथा सभकेँ सङ्कलन करैत बेहद प्रसन्नता भऽ रहल अछि। ऐ हेतु कथाकारक आभारी छी।

संगे, आदरणीय श्री मन्त्रेश्वर झा, डॉ. शिवशंकर 'श्रीनिवास', श्री रबीन्द्र नारायण मिश्र आ गजेन्द्र सर (श्री गजेन्द्र ठाकुर)जीक आभारी छी.! जनिक मार्ग दर्शन पाबि किछु-किछु कए रहल छी।

क्रमश: प्रो. धीरेन्द्र कुमार, डॉ. शिकुमार प्रसाद, श्री ओम प्रकाश झा, श्री कपिलेश्वर राउत, श्री राजदेव मण्डल आ श्री दुर्गानन्द मण्डलजीक सेहो आभारी छी।

ऐ साएओ पोथीक रचनाकेँ पुस्तकाकार रूप देबए-मे श्री नन्द विलास राय, श्री राम विलास साहु आ श्रीमती पुनम मण्डलक भरपूर सहयोग भेटल, ई सभकियो प्रसंशाक प्रात्र छैथ। हिनका सबहक प्रति हम आभार प्रकट कए रहल छी। तैसंग, पूरक सहयोगीमे अपन तीनू सन्तान क्रमश: पल्लवी, तुलसी आ मानबक चर्च करब सेहो आवश्यक बुझि रहल छी। तीनू बच्चाकेँ धन्यवाद-आशीर्वाद।

आइ-काल्हिक भागम-भागकेँ देखैत अपने लोकनिक सुविधा लेल छोट-छोट पोथीमे श्री मण्डलजी-रचित छोट-पैघ सभ तरहक कथाकेँ जोड़ियेलौं हेन। आशा अछि अपने लोकैनकेँ नीक लागत। सादर...।

उमेश मण्डल

निर्मली

24 नवम्वर 2018

कथाक सत्तैर-

गलगर भैंस

राति जुआ गेल रहै, दुपहरिया टपि गेल रहै, चैत मासक अमवसिया तँए गरदा-माटिसँ अन्हार आरो भरि गेल रहइ। ओना, ओसकणसँ सेहो माघक राति आ पनिकणसँ भादवक अन्हारक अमवसिया होइ छै, से नै चैत मासक अन्हार! बारह तँ बित चुकल छल, सिन्धुनाथ आ जलेसरीक जिनगीमे जहिना बारह बजि चुकल छल तेना नै, मुदा एक नै बाजल छल। जहिना अन्हारसँ एक-दू-तीन-चारि दिन बढ़ने इजोत अपनामे चारि-चान लगबैत मुस्की मारैत मेलाक रेड़ामे रगड़ लैत-दैत-पबैत ससरैत तहिना ने इजोतोसँ अन्हार एक-दू-तीन-चारि होइत चतुर्थी-मिलनक सिनेहासिक्त प्रेमक मधुर स्वरमे जिनगीक ओहन वृक्ष लगेबाक इच्छारोपण करैए जइमे पलास सिम्मर जकाँ बिनु पाते-फूलसँ भरल रहैए। मुदा...।

आध पहर राति बीतला पछाइतो ने सिन्धुनाथक आँखिमे नीन अबै छैन आ ने जलेसरीक आँखिमे। ओना, दू घन्टा पहिने ओछाइनपर एला पछाइत दुनू गोरेक बीच दिनक काजक लेखा-जोखा भऽ गेल छेलैन, जइसँ ओइ लेखा-जोखाकेँ उसारि नीनक आवाहन-ले गहवरमे गुहारि लगा दुनू गोरे अपन-अपन मुँह समेट मनमे घोंसिया लेलैन। मुदा जागलमे करक फेर-फार बेसी होइए, से तँ दुनूकेँ रोकनौं नै रूकैत, मुदा अपन-

अपन चलाकीकेँ हूँहकारी भरि अपन-अपन बहाना बनैबते छला। ओछाइनपर सँ उठि सिन्धुनाथ लघु-शंकाक बहाने बहरेला, मुदा जलेसरी जे ओछाइनपर सँ तजबीज केलैन तँ बुझि पड़लैन जे ओ मालक घर दिस जा रहल छैथ। भरिसक कोनो काज दिनमे बिसैर गेला से करैले। जँ काज भारी होइ आ असगर बुते नै होइन तखन हम कोन इनार-पोखैर खुनबैले तकैत रहब। मनमे अबिते जलेसरियो ओछाइनसँ उठि एक-लग्गा भरि पाछू पएर मारि चलि पड़ली। एक तँ ओहिना अन्हारमे लोक जेमहर जाइए तेमहर टार्च बाड़ैए, अगुऐत-पछुऐत बाड़ैए, चौबगली बारैए। गरमी मास छिऐ, अकाससँ धरती धरि देखैक प्रश्न अछि, जहिना रतिचर इजोतेपर झपट्टा मारि भोजन पबैए आ फनिगा फुनगी पाबि, तहिना ने धरतीपर कीड़ी-कमौड़ी पएरक धमक सुनि भागबो करैए आ झपटबो करैए। मुदा से सभ नै, सिन्धुनाथक मन टाँगल छेलैन चारि बजे जे खुट्टापर महींस कीनि कऽ अनने छला तेकर गालपर। भैयाकाका विचार देने छला जे गाए-महींसकेँ गालेमे अमृत बसै छै, जे जेते गलगर रहत ओकरा ओते बेसी दूध हेतइ। जेकरा जेते बेसी दूध हेतै ओकरा ओते बेसी बच्चो पलेतै आ मलिकारो पलेतै। आगू बढ़ि सिन्धुनाथ मालक घरसँ पहिने डेढ़ियापर सँ चारूकात टॉर्चसँ देखलैन जे कुकुर-नढ़िया तँ ने अछि। गाए-महींसक बच्चाकेँ नष्ट करैबला छी, मुदा से केतौ ने देखलैन। चारूकात टॉर्चसँ देख जोरसँ खखास केलैन। जइसँ मालकेँ बोलीक परेखि आबि जाइ। जखने बोली परेखि लेत तखने ओकर पशुमत जगि जेतै जइसँ बोनैया रूप बदैल घरैया घर करए लगतै।

खखासक अवाज सुनि महींसो तेना साँस छोड़लक जे बाहरेसँ सिन्धुनाथ सुनि बुझि गेला जे ओहो माने महींसो जागि गेल। मालऽ घरक मुँहपर बत्तीक जाफरी दुनू कातक खुट्टामे बान्हल ढाठमे सटल। घरक मुँहपर सँ सिन्धुनाथ ठिकिया कऽ महींसक गालपर टॉर्चक इजोत फेकलैन। पौज करैत भैंस। मनमे भेलैन जे तिसियौटाक घूर केने छेलौं,

ओना, मिझा तँ देनहि छेलिऐ मुदा हो-ने-हो जमि कऽ फेर ने कहीं सुनैग गेल हुअए। खरमास छी, आगिक डर मानी। चैत-बैशाखक घूर थोड़े पूस-माघक घूर होइए जे माछी-मच्छरक संग जाड़ोसँ रक्षा करत। लऽ दऽ कऽ माछी-मच्छर भगबै दुआरे घास-पातक घूरसँ काज चलि जाइए।

एक लग्गी पाछू जलेसरी ठाढ़ भेल पतिकेँ हियासैत जे कोन काज दिस बढ़ि रहला अछि। जाफरी खोलि सिन्धुनाथ मालऽ घर जा पहिने महींसक बच्चाक देहपर हाथ देलैन। झबड़ल केश, एकमुहरी खसल, बच्चाक देहपर हाथ देख महींस दुनू आँखि गरा मलकार केँ देखैत। जीह निकालि बच्चा सिन्धुनाथक हाथक आँगुर चाटैक ओरियान करए लगल। वएह आँगुर ने थुथुनमे दूध भरैए।

आगू ससैर जलेसरी घरक मुँहपर खुट्टा लगा खुट्टे जकाँ ठाढ़ भऽ गेली। मुँहमे कोनो बोल नहि। पीठपर सँ जहाँ सिन्धुनाथ बच्चाक देहपर हाथ आगू बढ़ौलैन आकि बच्चा फुर्र-फुर्रा कऽ उठि, जीह निकालि सिन्धुनाथकेँ चाटैक ओरियान केलक आकि डाँर लिबा गोंतए लगल। गोंत पड़ैक खियालसँ सिन्धुनाथ उठि कऽ महींस दिस बढ़ला। तैबीच बच्चाकेँ गोंतैत देख महींसो उठि कऽ ठाढ़ भेल, आ बोली देलक।

आगू ससरैत सिन्धुनाथ महींसक थुथुनपर हाथ फेड़ैत गाल निहारए लगला। ओना, पौज करैत देख नेने छला। ठाढ़ो महींस पौज करैए। खास कऽ खेलोपरान्त। मुदा जखन मलकार बच्चाकेँ चुचुआ भैंस दिस बढ़बैए तखन महींसक मातृत्व जगि जाइ छै, आ जेतबे थनमे दूध रहै छै तही लऽ कऽ ओ तैयार भऽ जाइ छइ। थुथुनसँ आगू हाथ ससारैत सिन्धुनाथ ऐगला राग देने महींसक थन लग हाथ बढ़ौलैन। पनहाइत छीमड़ि देख, बिनु हाथ बढ़ौने निहारए लगला। यएह लक्ष्मी थिकीह! यएह सरस्वती थकीह! वुद्धि रूप सरस्वती, भोज्य रूप लक्ष्मी! हाथ आगू बढ़बैक विचार केलैन आकि जलेसरीक मन तड़पि गेल।

एकटा छोट-छीन माटिक ढेप सिन्धुनाथक आगूमे ऐ खियालसँ फेकली जे भूतक ढेप बुझि पाछू तकता। होइतो अहिना आएल अछि, कता गाममे रातिक अन्हारमे राकश सभ गोला-ढेपा बरिसबै छल। अल्लापुरमे अखनो कोनो-कोनो गाम अछि...। तेतबे नै बाधक धान-रबी ओगरनिहार रखबारकेँ भरि-भरि राति तामल खेतक गोला उघबबै छल। मुदा जुग बदलल, जमाना बदलल, लोक बदलल लोकक खेल बदलल...।

ढेपा महींसक आगूमे खसिते भड़कऽ लगल मुदा मलकारकेँ आगूमे देख मात्र सिंगहौटीए टा डोलौलक। गोला कातमे असथिरसँ बैस गेल। सिन्धुनाथ टॉर्चक इजोत आगू फेकलैन तँ बुझि पड़लैन जे कियो स्त्रीगण आगूमे ठाढ़ छैथ। मुदा चिन्हैमे देरी नै लगलैन, बजला-

“ईहो कि आन जगह छी, ओइठाम किए ठाढ़ छी, ऐठाम आउ। अहाँ बुझै छी जे हिनकर (पतिक) छिऐन, से नै अहूँक छी, मुदा अहाँक ताधैर नै छी, जाधैर देहपर हाथ नै देबै आ थनसँ दूध नै निकालबै।”

अपन बँटाइत सिनेह देख जलेसरीक मन झुझुआएल। झुझुआएल ई जे ई राति तँ दुनू गोरेकेँ एकठामक छी। पिय मिलन बेर छी। तखन, जँ असगरे अपन ओछाइनपर चलि जाए तँ पति विलाप केकरा हेतइ? मुदा ई कि झूठ जे ‘जेतए बसी सएह मातृवत पवित्र भूमि आ जइसँ जीवन-धार बहए वएह पवित्र सरिता भेली।’

दुआरि टपि जलेसरी आगू बढ़ली, जहिना एक नारी-दोसर नारीसँ मुँह फुला फुफकार कटै छैथ तहिना जलेसरीकेँ देख महींस फुफकार छोड़लक। जलेसरी सहैम गेली। सहैमते पाछूए मुहेँ दू डेग बढ़ली। तही बीच सिन्धुनाथ थनक छीमी टॉर्चक इजोतमे हिसासए लगला, जे दूध-धारमे कोनो खैंठी-तैंठी तँ ने भऽ गेल अछि। ओना, साँझमे दुहैबेर देख नेने छला, मुदा तखन धियानमे नै रहलैन जे अखैन मनमे उठि गेलैन।

जलेसरी दू-डेग पाछू हटि ओहिना फेर ठाढ़। महींस लगसँ सिन्धुनाथ ससैर जलेसरीक लग पहुँच हाथ पकैड़ बजली-

"चलू हमरा सने। धार-साज छी, जेते धाड़त तेते ताड़त। तँए छोड़ि कऽ पड़ाउ नहि।"

जहिना बाँहि पकैड़ पुरनिहार संगी भेट जाइ छै तहिना जलेसरीकेँ सेहो नव काजक संगी भेटलैन। मुदा मनमे एते शंका तँ रहबे करैन, जे किछु छी तँ सिंगे-मांग छी। मुदा किछु रहह, जखन करताइत संगी आगू-आगू छैथ तखन पाछूसँ जाइमे की लागत। जेना-जेना ओ हाथ बढ़ा-बढ़ा आगू-आगू बढ़ता तेना-तेना पाछू-पाछू बढ़ैमे कथीक डर। हाथ पकड़ने जलेसरीक हाथ महींसक थुथुनपर रखैत सिन्धुनाथ कहलकैन-

"यएह छी एकर गाल, जेते गलगर रहत आ ओकरा जेते भरबै, तेते ओहो अहाँक गाल भरि अपनो गाल भरत। लछमी छी सदय: लछमी!"

बजैत-बजैत सिन्धुनाथक मनमे उत-उत उत्साह तेना जगलैन जे पत्नीक गरदेन बाँहिसँ जकैड़ महींसक चारू पएरक बीचक जगहमे बैसबैत सिन्धुनाथ चारू छिमड़िक धार देखबैत बजला-

"यएह सरिता छी, ओइमे जँ नित स्नान करैक अवसर भेट जाए तँ ओकरे जिनगीक धार बुझि हेलैत चली, बहैत चली... ।"

ओना, चारू टाँगक बीच सिन्धुनाथो बैसल मुदा तैयो जलेसरीकेँ मनमे डर होइते रहइ। कारण घुरियाइत रहै जे माल-जाल लथराह होइए ओना, गाइयक वंशमे जेते लथरपन छै ओते महींसक वंशमे नहियेँ छै मुदा देहमे जहिना अलंकार अलंकृत करै छै जेकर धार दू-दिसिया होइ छै, तँए गाए- महींसक संयुक्त उच्चारण किए ने नव लोकक मनमे उचारत जे महींसो लथराह होइ छइ।

सिन्धुनाथ जलेसरीक मन आँकि लेलैन बजला किछु ने। नै बजैक कारण भेलैन जे जहिना कोनो चिकित्सक कोनो रोगकेँ ठिकिया दवाइ

फेकैए जइसँ मनमे एतेक श्रद्धा जगै छैन, जइसँ किछु बजबाक समयकेँ अनुपयुक्त बुझैत तहिना सिन्धुनाथक मनमे भऽ गेल रहैन। मुदा हेराएल लोककेँ जँ किछु तोष-भरोस देल जाए तँ हेराएब कमै छइ। तही खियालसँ सिन्धुनाथ पाशा बदलैत बजला-

"केते दूधक बखारी बीच बैसल छी?"

ओना, डेराएल जलेसरीक मन तँए दूधक बखारी नै बुझि पेली। गाममे धाने-मरूआ टाक बखारी देखने-सुनने तँए। मुदा दूधोक बखारी होइ छै एहेन विचार तँ विचड़िये गेल-

"केते दूधक बखारी छी?"

पत्नीक गंभीर जिज्ञासा देख सिन्धुनाथक मनमे समुद्र जकाँ जुआरि उठि गेलैन। मुदा केना समुद्रमे जुआरि उठि फेर अपने जगहपर घुमि जाइए। तैठाम तँ समुद्रक ओइ लहैरक पानिकेँ ओतबे उमेद ने करब जेते घेरि कऽ रोकि लेब। मुदा रोकब असान अछि? हँ असान अछि। जँ जोगी नख-सिख देखै छैथ तँ कि ओहन देखनिहारक कमी अछि जे सिख-नख नै देखैत अछि। अतीतक सेर- सम्पैतसँ मान-प्रतिष्ठा धरि गेलो पछाइत कि लोकक रोब-दोब आकि रूआब-रिसाव थोड़े चलि गेल अछि? मुदा अपन ओझरीकेँ सोझरबैत सिन्धुनाथ बजला-

"अखैन दुइए बेकती छी। अपने दुनू बेकतीक जिम्माक सेवा भेल। जखन सेवा करब तखन ने मेबा पाएब।"

फूलक कली जकाँ फूलक सभ रूप-गुण समटा जहिना रहैए तहिना जलेसरीकेँ सभ किछु रहितो समटाएल रहैन। तँए किछु बाजि नै पेली। मन अक-बका कऽ सक-पका गेलैन। अकबकेबो केना ने करितैन घर-घराड़ीक नव रूप देख रहनिहारक मन अकबकाइते छइ। अकबकाएबो सोभाविके अछि। सोभाविक ई जे अखैन घराड़ी केर बगलक सड़क पूब दिससँ अछि, नवका रोडक नापी उत्तर देने भेल, तखन घराड़ीक मुँह

केमहर बनाएब नीक हएत? पत्नीकेँ गुम्म देख सिन्धुनाथ पुछलखिन-

"गुम्म किए भेलौं। जहिना मनुखक दुनू मातृकोष अमूल्य धन-धान्यसँ भरल अछि, तहिना ई महींसो अप्पन छी।"

'अप्पन' सुनि जहिना बिऔहती कनियाँक मन अपन गहना देख-सुनि फङ्गैत तहिना जलेसरियोक मन फँगलैन-

"दुनू गोरेकेँ पेट भरि जाएत?"

अवोध, अनपढ़ पत्नीकेँ देख अपना माथपर हाथ फेड़ैत सिन्धुनाथ अपन बेथा-कथा नै कहि, बजला-

"दुइए परानीक पेट किए कहै छी, पाँचो परिवारक पेटे नै जिनगियो भरत।"

पेट तँ जलेसरी खेनाइकेँ बुझैत तँए कोनो शंके ने भेल मुदा 'जिनगियो भरत' ई तँ मनमे खट-खुट करैए लगलैन, बजली-

"की जिनगियो भरत?"

प्रश्नक दोहरी रूप देख पहिल एक-एक खलकेँ खोलब दोसर मुख-दुआर खोलब। राति सेहो बेसी भऽ गेल। दिनक थकान सेहो अछिए। मुदा प्रश्नक उत्तर जँ पत्नीकेँ नै दऽ देबैन आ राति-विराति जँ केकरो किछु हेतै आ काज बाधित हएत तखन तँ विचारे तर पड़ि जाएत। तँए मोटो-मोटी तँ अपन मनक भार हटा लेब किने, नै तँ अनेरे अस्सी मनक पाथर जे दबने अछि ओ ओहिना दबने रहत। जहिना कलाकार मूड बना कऽ मंचपर जाइ छैथ तहिना सिन्धुनाथोक मन मेक-अप रूमसँ बाहर पहुँचलैन। मेक-अप होइते वाचब शुरू केलैन-

"दुनू साँझ मिला पनरह किलो दूध हएत।"

"पनरह किलो केते भेल? अपना सबहक जे बरहगण्डी सेर अछि तइसँ केते भेल?" -जलेसरी बजली।

पत्नीक दोहरी प्रश्न, एक बरहगण्डीकेँ किलोमे आनब, तइमे जे घटबी भेल से केतए जाएत। दोसर हिसाब सेर-कनमामे आ तौल किलो-ग्राममे, विचारकेँ समटैत सिन्धुनाथ बजला-

“राति बेसी भऽ गेल। चलू ओछाइनेपर गपो-सप्प करब। जेतेकाल ऐठाम रहबै तेतेकाल महींसो आ बच्चो ठाढ़े रहत, अपनो सभ अराम करब आ ईहो दुनू बैस कऽ पौज धड़त।”

थनतरसँ दुनू बेकती उठि विदा भेला। आगू-आगू जलेसरी आ पाछू-पाछू सिन्धुनाथ। पड़ू लग पहुँच सिन्धुनाथ मुँह चुमि दू-तीनबेर थपथपा देलैन। पाछू उनैट जलेसरी सेहो देखली। घरसँ निकैल ढाठ-जाफरी बन्न कऽ आगू बढ़ि टॉर्चसँ सिन्धुनाथ चारूकात इजोत फेकलैन। अन्हार राति छोड़ि किछु ने। गाछ-बिरीछ कनी हटल तैपर धुराएल मेघ, जेतए टॉर्चक इजोत पहुँचबे ने कएल। आगू बढ़ैत सिन्धुनाथ पत्नीकेँ कहलखिन-

“रातिक केहेन रंग बुझि पड़ैए।”

पतिक प्रश्न सुनि जलेसरीकेँ फबलैन। बजली-

“अन्हार तँ अपने रंग छी जेकरा सियाही गुण छइ। तखन ओकर रंग की हेतइ?”

फगुआक जोगिरा जकाँ सिन्धुनाथ डम्फा संग ताल मिलबैत बजला-

“यएह छी दुनियाँ। अन्हार गुज-गुज अछि, मुदा अन्हरो-लूल्हा तँ एहनो अन्हारमे अखज जकाँ अखनो जीविते अछि।”

ओछाइनपर अबिते सिन्धुनाथ दूधक फल जोड़ैत बजला-

“पनरह किलो दूधक दाम- ३०x१५= ४५० भेल। एतेक आमदनी परिवारमे भेल। जे अखैन धरि बोइन-बुत्तापर ठाढ़ छेलौं। दुनू साँझक अन्नक खर्च सौ रूपैआसँ कम भेल। एते तँ आशा भइये गेल किने जे

नूनो-रोटी आकि छुच्छो भात खा जीवि सकै छी! यएह जीबैक आशा जिनगी पाएब भेल।"

बिसवासु जिनगीक आश पाबि जलेसरीक मन छड़पि उठलैन-

"आमदनी हएत ते खरचो हएत किने?"

"हँ से तँ हेबे करत। जे अनिवार्य काज अछि ओ अनिवार्य खर्चमे एबे करत बाँकी खगताक हिसाबसँ औत।"

तइ बिच्चेमे जलेसरीकेँ हाफी भेल। हफुआइत देख सिन्धुनाथ मने-मन सोचलैन जे आब सुतबे नीक हएत। बजला-

"बड़ राति भऽ गेल, फेर सबेरे जगबो अछि। सुतू।"

जहिना कोनो विद्यार्थीकेँ पढ़ैक कीड़ा पकैड़ लइ छै, तहिना जलेसरीकेँ जेना पकैड़ लेलकैन। जहिना करखनो नीन तोड़ैले देह डोलौल जाइ छै, तँ करखनो बाँहि, तँ करखनो जाँघ पकैड़ झमारल जाइ छै, तहिना बीतैत राति अबैत नीनकेँ रोकैक परियास करैत जलेसरी बजली-

"अपना हाथक राति छी, नीनोकेँ की सीमा नाँगैर छै, अपन छोटकी बहिनक बिआहमे तीन राति आँइखो ने मुनलौं। कहाँ तइसँ काजमे घटबी भेल। एक होइ छै काजकेँ घटबी करब आ दोसर होइ छै बढ़वी करब।"

पत्नीक गंभीर विचार सुनि सिन्धुनाथक मनमे सेवाक गाछ अँकुरब बुझि पड़लैन। कहैले सालक राजा वसन्त ऋृतु छी, मुदा जेकरा वसन्तसँ भेँटे नै? छोट जिनगी रहने, माने ई जे वरसाती तरकारी अछि जेकर खेती जेठक पछाइत शुरू होइ छै आ कातिकसँ पहिने खतम भऽ जाइ छइ। जेकरा वसन्त ऋृतुसँ भेँटे ने होइ छै ओ केना बुझि पौत जे कोकिलक तान, हवा सुगंधक मुस्कान, रंग-अबीरसँ भरल आगमन केहेन होइ छै, वसन्त पंचमी आकि सरस्वती केना होइ छइ। जैठाम समैये-सँ भेँट नै भेल तँ फड़त-फुलाएत केतए आ कथी?

समुद्रक लहैरमे जहिना करोड़ो हीरा-मोती-सितुआ-घोंघा दहलाइत रहैए तहिना सिन्धुनाथक मन सेहो दहलए लगलैन। एक तँ ओहिना सिन्धुनाथक विचार रहैन जे पत्नी सुतती तँ काल भागत, किछु जीबैक आशामे कदमक गाछक डारिमे झूला लगा झूलब आकि मचकी लगा मचकैत चलब। मुदा से भेलैन नहि। मनो गवाही देलकैन जे जेते काल गप-सप्पसँ काज धरि, दुनू बेकती एक संग रहब, यएह ने भेल जिनगीक असल प्रेम जे संगे-संग शरीरसँ नि:सृत होइत रहत। बजला-

“जेकरा अहाँ भैंस बुझहै छिऐ ओ भैंस नै लछमी छी। जेते खुएबै-पीएबै तेते ओकर मन चैन रहतै, जइसँ खुशीक पाउजो करैत रहत आ हँसितो रहत।”

हँसब सुनिते जलेसरी, जहिना अनाड़ी-धुनाड़ी शिकारी धड़फड़ा कऽ तीर फेकैत तहिना, धड़फड़ा कऽ बजली-

“तखन तँ कनितो हएत!”

हँसब-कानब दुनियाँमे केकरा ने होइ छै, मुदा हँसब-कानबक बीच दूरी नै देख पबैए जइसँ कननी बेसी अछि हँसनी कम अछि। खिलैत फूलक शकल-सूरत देख सिन्धुनाथ बजला-

“हँ, हमर-अहाँक यएह भक्ति कहियौ आकि जिनगी जीयब कहियौ सभसँ पैघ काज भेल।”

जलेसरीक चहकैत मन चहचहा उठल-

“जहिना सभसँ पैघ धन कहै छिऐ तहिना तँ नँगर-डोलौन सेहो ने छिऐ, एकर केते बिसवास कएल जा सकैए।”

सिन्धुनाथक मन ठमैक गेलैन। ठमैक ई गेलैन जे समाजक खिस्सा-पिहानीमे तँ एहेन ऐछे जे माल-जाल नँगर डोलौन छी। जेकरा अहाँ नँगर डोलौन कहै छिऐ ओ तँ प्रकृति प्रदत्त सम्पैत छिऐ, जेकर उपयोग मनुख अपन जिनगी लेल करै छैथ।

मुदा ई तँ अपने ने बुझए पड़त जे ढेनुआर गाए-महींसकेँ कोन तरहक सेवाक जरूरत अछि। करवैन कोन रोग-वियाधिक प्रकोप भेल, खेनाइ-पीनाइमे दुख-तकलीफ भेल, एकरा जँ पोसिनदार नै बुझता तँ जिनगी जीबैक दोसर उपय करए पड़तैन। मनुखक अवस्थे केते अछि, महींसक केते अछि, केते गाइयक अछि आ केते बकरीक अछि...।

ओहीमे ने देखए पड़त जे एकटा महींस केते दूध दऽ सकैए आ हमरा केते दइए।

यएह भेल जिनगीक प्रतियोगिता। जे सनातन अछि। सभ दिन होइते रहत। मुदा पति बनि जखन पत्नी लग कोनो विचार-विमर्श करए लगब तखन जाधैर पत्नीक मन प्रवोधि कऽ नै पतियाएब ताबे छोड़लो तँ नहियेँ जा सकैए।

सभ बातकेँ झाँपैत-तोपैत सिन्धुनाथ बजला-

“अनेरे कोन मगजमारीमे नीन बरदौने छी, भरि दिन तँ खटबे केलौं, ओछाइनोपर तँ चैनक नीन लिअ।”

मुदा ले-बलैया! सिन्धुनाथक अपन मनक विचार दबा गेलैन। दबा ई गेलैन जे मनमे रहैन जे खाइ-पीबैक जोगाड़ केना करब। भोरे उठि कऽ तँ काजेमे लगि जाएब, तखन विचारि केना पाएब। मुदा से नै भेलैन बिच्चेमे जलेसरी टपकि गेली-

“सींग-नागरिक कोन ठेकान, करवैन अछि आ करवैन जाएत। दस दुआरी छी एकठाम केतौ थोड़े, लंकाक हनुमानजी जकाँ नाँगैर दाबि कऽ बैसत।”

सिन्धुनाथक मनमे उठलैन कोनो काजकेँ विचारानुसार रोपित करैमे पहिने बिसवास अगुवाबए पड़ै छै, पछाइत वएह बिसवास सकताइत-सकताइत श्रद्धाक रूपमे अँकुरित होइ छै, जे बढ़ैत-बढ़ैत श्रद्धाक पात्र बना जिनगीकेँ पवित्रता प्रदान करै छइ। मुदा से जलेसरीक

मन थोड़े मानत..?

मन नचलैन बजला-

"कोन लाइ-लपटाइमे लटपटाइ छी। अखने फड़िछा लिअ जे महींस पोसैमे की-की प्रक्रिया अछि, तेकरा दुनू गोरे बाँटि लिअ। सभ काज जँ सभ करब तँ एँड़ी-दौड़ी बेसी लागत। काज फड़िछा नेने चौड़गर जगहो भेटत आ दुनू गोरेक काज दुनू गोरे देखबो करब। जइसँ कोनो तरहक शंको ने हएत।"

सिन्धुनाथक विचार जेना जलेसरीकेँ बेधलकैन। बेधलकैन ई जे दुनू-परानीक बीच मुट्ठी-रूपैआ छी, परीक्षा लइए लिअ जे केकर मुट्ठी खोलि के रूपैआ पकैड़ लेब।

मुदा पीठिया मिलान तँ छी नै, ओलती मिलान छी। बजली-

"बुझलौं, अहाँ हारि गेलौं, सुतू। मुदा एते तँ कहबे करब जे जे पोसलौं से दस-दुआरिया छी। करवैन रहत करवैन उड़त तेकर कोन ठेकान।"

जलेसरीक दहलाइत मनकेँ पकैड़, पीपर आकि बरक गाछमे जहिना भूतकेँ काँटीसँ ठोकल जाइ छै तहिना ठोकैत सिन्धुनाथ बजला-

"दस दुआरी छी तँ आरो नीक भेल किने जे दसो दुआरि गाए-महींसक रहैत दूधक धार बहए, तइमे अहाँक कोन जमा-जिगीर चलि जाएत जे एना बोनैया कुकुड़ जकाँ औनाइ छी? अपन घर-गिरहस्तीक ठेकाने ने अछि आ...।"

जलेसरीक मन सहैम गेल। मने-मन समझौता करैत बजली-

"हँ राइतो बहुत भऽ गेल।"

दुनू परानीक बोली-चाली तँ बन्हा गेलैन मुदा आँखिमे झपकी एबे ने केलैन। तैयो दुनू अपन-अपन गर पकैड़ सुतैक उपक्रम केलैन। मुदा

दुनूक आँखिक नीन उड़ल।

जहिना छोट-छोट बच्चा रस्ता परहक गरदा समेट थुम्हा बना अपनाकेँ संकल्पित चुपा-चुप, धुपा-धुप व्रत चुपीसँ करैत जे पहिने बाजत से चोर।

मुदा ओ सभ संकल्पकेँ निमाहबो करैए। निमाहैए एना जे जे चोर भेल ओकर दुनू हाथ जोड़ि लपमे माटि भरैत अछि तैपर शिवलिंग जकाँ दू-तीन इंचक कटकी गोबि दइत। आ दुनू आँखिकेँ दुनू हाथसँ दाबि अनभुआर जगहपर लऽ जा रखा, आँखि बन्ने केने घुमा कऽ ओही जगहपर आनि कहैत जे 'जो ओइ रखलाहाकेँ ताकि कटकी उखाड़ने आ।' ओहो जखन ताकए जाइए तखन बौआइत-बौआइत ताकियो लइए आ केते हेराइयो जाइए...।

मुदा से सिन्धुनाथकेँ नै भेलैन। चुपा-चुप करैत अपन जीवन सूत्र पकैड़ चलैक विचार केलैन। जहिना जागल लोककेँ काज रहने काजमे मन लगैए आ काज नै रहने उकस-पाकस करैए तहिना किछु-कालक पछाइत जलेसरीकेँ भेलैन। कनीयेँ जोरसँ सिन्धुनाथकेँ बिठुआ कटलकैन। ओना, सिन्धुनाथो जगले तँए बुझि गेला मुदा अपन काज दुआरे अपनाकेँ सुतल घोषित करैत हँ-हूँ किछु ने बजला।

जहिना छिड़िआइत आकि कोनो छिड़ियाएल वस्तुकेँ पकैड़- पकैड़ समेटलो पछाइत फेर छछैल कऽ आकि गुड़ैक कऽ पुन: छिड़ियाइते रहैए तहिना सिन्धुनाथ छिड़िया गेला। मुदा तैयो जलेसरी जोर दैत दोहरी बिठुआ कटलकैन जे कोनो कीड़ी-फतिंगीक नाओं कहि फेर एकबेर महींस घर देख आएब। किछु छी तँ दूधक बखारी छी किने? मुदा सिन्धुनाथ बुझितो अनठौलैन। बुझबो केना ने करितैथ जे दाँतक काटब आ बिठुआ काटब एकरंग थोड़े होइए। काटबो तँ रंग-रंगक ऐछे, केतौ विचार काटब, तँ केतौ जिनगी काटब, केतौ सम्बन्ध काटब, तँ केतौ

बिठुआ काटब। जलेसरीक चुटका चुटकीएमे रहि गेलैन जइसँ चुटकियाइते रहि गेली।

मुदा से भेलैन नै सिन्धुनाथक मनमे उठलैन जे आफदक अन्त भेल की नहि। माने जाबे पत्नी जागल रहती ताबे आफत बनल रहती, नीन पड़ि जेती तखन ने बुझब जे सोल्होअना निचेन होइ-जोकर भऽ गेलौं, जँ से नै परेखि लेब तँ जागल लोक उकस-पाकस कैरते अछि, से जँ भेल तखन तँ अनेरे पानिक लकीर जकाँ केतए-सँ-केतए दहला कऽ चलि जाएत। मनमे अबिते सिन्धुनाथ नरमेसँ पत्नीकेँ बिठुआ कटलैन।

मुदा तँए कि जलेसरी मानिनि नै जे लगले मानि जइतैथ हुनका कि नै बुझल छैन बिठुओ-बिठुआक मोल छइ। खीर आ खिच्चैड़केँ एक कहि-कहि बाल-बोधकेँ लोक ठकि लइए जे बौआ दलियाहा-नुनियाहा खीर छिऐ। मुदा बिठुआक मोल जलेसरी नै बुझै छैथ से बात नहियेँ अछि। मुदा सुतरलैन। सुतरलैन ई जे ओहो ऊह-आँह नै केलैन। दुनू जागल कि दुनू सुतल से तँ वएह बुझता, जँ अहूँकेँ परेखब हुअए तँ अजमा कऽ देखियौ।

सिन्धुनाथकेँ अपन कएल काज आ अपन विचारपर खुशी भेलैन। खुशी ई भेलैन जे अपन पुश्तैनी खेतक इतिहासमे पाँच कट्ठा खेतक मालिक सिन्धुनाथो। पुश्तैनी परम्परानुसार माए-बापक संग जे बोइन-बुत्ता करब शुरू केलैन ओही बीच परिवार छोट रहने आ आमदनी बढ़ने घराड़ी छोड़ि पाँच कट्ठा खेत पिता कीनि देलकैन। अपन जिनगीक अन्त सियावरकेँ भेलैन।

सिन्धुनाथक संग जलेसरियो ओहने जिनगी पकड़ने अपन पैंतीस बर्खक उमेरपर पहुँच गेली। अपन जे सम्पैत- पाँच कट्ठा खेत- छेलैन तेकरा समुचित ढंगे खेती नै केने उपजा-वाड़ीक कोनो ठेकान नै, जइसँ जिनगीक कोनो पहिया घुसकै-फुसकैक आशा नै दइ छेलैन।

बदलैत परिवेसमे मन विचड़लैन। विचड़िते मनमे भेलैन जे अपन जिनगी अपना-भरे ठाढ़ करब। तइले श्रम-साधनक खगता हएत। श्रम तँ ऐछे भलैं कम्मे किए ने हुअए, रहल साधनक, ओ केना औत? जमीनक मोल पहिने जे छल, आब ओइसँ बेसी कता-गुणा भऽ गेल, मुदा अधिक पूजी भेलौ पछाइत आमदनीमे बढ़ोतरी नै भेल। साधन दू-दिसिया अछि। एक अछि बैंक आ दोसर अछि बपौती सम्पैत।

पाँच कट्ठा खेतक उपज बैंकक सूदियो बरबैर नै अबैत अछि तैपर मलगुजारीक देनी अछि, एहेन स्थितिमे की नीक? बैंकक पूजी दिस बढ़िते मन भिन-भिना गेलैन। भिन-भिना ई गेलैन जे कोनो कारोबारकैं बैसैक पूजी नै बना ओझरा गेल अछि। बैसैक पूजीक माने भेल जैठामसँ काज शुरू हएत। मुदा सालक-साल घुमलो पछाइत, श्रम-साधनकैं लूटबैत, कियो-कियो ठाढ़ होइमे सफलो होइ छैथ मुदा अधिकांश असफले। सिन्धुनाथ विचारि लेलैन जे पाँच-कट्ठामे सँ एक कट्ठा बेच लेब। पचास हजार रूपैआ हएत, दस हजार बेना लऽ रहैक ठौर बना, किछु दिनक खोराकी जोड़िया लेब। पछाइत एक-मुश्त रूपैआ लऽ कऽ महींस कीनि आनब।

तीन पूजी एक संग औत- दूध, बच्चा आ महींस। ओकरे सेवा केने जिनगी आगू मुहेँ ससरत। केकरा ने मन होइ छै जे बच्चेसँ हवाइये जहाजकैं सवारी बनावी, मुदा...।

चालीस हजारक गुजराती भैंस कीनि आनि, खुटापर बान्हि नव जीवनक नव वर्षक नव कामनाक संग सिन्धुनाथ दुनियाँमे पएर रोपैक परियास केलैन।

❑ **साभार : उकड़ू समय**

प्रवल इच्छा

अदहा जेठ बीत गेल छल। आन सालसँ भिन्न ऐ सालक जेठक रोहानी अछि। आन साल जेना बरखा नइ होइ छल तइसँ गर्मीक प्रकोप विशेष रहै छल, से ऐ साल नहि अछि। समय-समयपर तीनटा बिहड़िया बरखा भेल, जइसँ जेठ रहितो फागुन जकाँ खुशनुमा समय बनल। ओना, बरखा तीनिए-टा भेल, मुदा अकासमे वादल बेसी काल उमड़ैत-घुमड़ैत रहल, जइसँ ने बेसी रौदक ताप बढ़ल आ ने लूए चलल। आन साल जेना लोक दस बजैत-बजैत खेत-पथार, बाध-बोनसँ घरपर चलि अबै छल से ऐबेर नहि अछि। नहाइ-बेर तक लोक बाध-बोनक काजमे जुटल रहैए।

गामक रोहानी सेहो आन सालसँ नीक अछि। जहिना बैशाखा तीमन-तरकारीसँ बाध लहलहा रहल अछि तहिना गरमा मकइ, धान आ खेरही सेहो बाधकेँ हरियर-कचोर केनहि अछि। तैसंग आम-जामुन सेहो तेना लुधकी लागि फड़ल अछि जे गाछी-बिरछीसँ अबैक मन नहि होइए। केते सालक पछाइत ऐबेर एहेन आम फड़ल अछि। जहिना आमक फड़ी अछि तहिना जामुनोक अछिए। तहूमे गामक जे किसान सभ छैथ, ओ ओहेन अनुभवी छैथ जे जहिना चुनि-चुनि आमक गाछी-कलम लगौने छैथ तहिना जामुनो-गुलजामुन लगौनहि छैथ। जइसँ गुल-जामुनक संख्या बेसी अछि। गृहस्ताश्रममे सरही-कलमी दुनूक खगतो अछिए। जहिना खाइ-पीबैले नीक-नीक कलमी आमक खगता अछि तहिना जरण-मरणमे सरही आमक गाछक खगता सेहो अछिए।

प्राचीन गाम रहने जहिना गाछी-कलमसँ सम्पन्न अछि तहिना

बेख-बुनियादिसँ सेहो सम्पन्न अछिए। बेख-बुनियादि भेल- नीक-नीक सुकाठ लकड़ीक गाछक संग बाँस-बँसबारि सेहो। जीवनमे जहिना खाइ-पीबैले आम-जामुन, लताम-बेल इत्यादि सभ रंगक फलक खगता होइए तहिना घर-घरहट करैले नीक लकड़ियो आ बाँसोक खगता अछिए।

ओना, पुरानो-पुरान गाममे अन्तर अछि। किछु गाम एहेन अछि जे कमला-कोसीक, चपेटमे पड़ि केता बेर उपटल अछि आ केता बेर बसल अछि, मुदा हमर गाम से नइ अछि। धार-धुरमे केबल एकटा चरिमसुआ धार अछि जे बर्खाक पानि पीबते फुलाइए आ बर्खाक अन्त होइत-होइत सटकए लगैए जे कातिक बीतैत-बीतैत सुखि जाइए। ओना, गामक जेतेक जमीन धारक पेटमे अछि ओइमे कोनो उपजा-बाड़ी नहियेँ होइए, तइसँ एते नोकसान तँ गामक अछिए, मुदा एते तँ नफ्फो अछिए जे कमो बरखा भेने आन-आन गामक पानि उठा कऽ धार अनैए आ गामक पोखरियो आ चौरियो सभकेँ भरि दइए जइसँ पानिक सोलहन्नी खगता तँ नहि, मुदा अदहा-छिदहा तँ पूरा होइते अछि। तहूमे धारक पेट तेहेन उथराह अछि जे तीनियोँ-चारि हाथ पानि मोटाइते ऊपर फेकए लगैए। जइसँ खेतो सभ पनिआइए आ पोखैर-झाँखैर सेहो भरि जाइए।

तेतबे नहि, कमला-कोसीक प्रकोप नहि रहने गामक गाछियो-कलम आ खेतो-पथारक आँड़ि-मेड़ नीक अछिए। साए-साए बर्खक जहिना शीशोक गाछसँ गाम भरल अछि तहिना साए-साए बर्खक आमोक गाछ आ बाँसोक बँसवारि अछिए। सुकाठ लकड़ीमे शीशोओक अपन महत अछिए। महत ई जे जहिना घरक खुट्टा-खाम्ही मजगूत होइए तहिना घरक ऊपरका भागमे तड़क, धरैन, मानी थम्हक रूपमे सेहो अछिए। तैसंग घरक बीचला भागमे केबाड़-चौकैठक संग सुतै-बैसैले चौकियो-कुरसीक पूर्ति केनहि अछि।

ऐबेर जहिना उपजा-बाड़ी, कलम-गाछी लहलहा रहल अछि तहिना लगनो क धुमसाही अछि। अपनो मुड़नक नौत-हकार मात्रिकसँ आएल अछि। परसू ममियौत भाइक बेटाक मुड़न छी, कपड़ो-लत्ता आ

नौत-पुराइक चीजो-वौस कीनए झंझारपुर गेल छेलौं। बजारो आ हाटोक काज छल। ऐगला हाट रबि दिन होएत, जइसँ काज नइ चलैत, तँए बुधेक हाट करए झंझारपुर गेल छेलौं। झंझारपुरसँ चीज-वौस कीनि घरपर आबि साइकिलसँ उतैर चीज-वौस उतारिते रही कि हंसराज काकाकेँ खेत दिससँ अबैत देखलयैन। रस्ते कातमे घरो अछि आ दरबज्जाक रूखि सेहो रस्ते दिस अछि।

हंसराज काकाकेँ देखते कहलयैन-

“काका, तमाकू खा लिअ तखन जाएब।”

ओना, पौने एगारह बाजि रहल छल जइसँ नहाइ-खाइ बेर भइये गेल छल, मुदा जखन सोझामे हंसराज काका पड़ला आ किछु नहि बजितौं से केहेन होइत। पान-सात दिनसँ भेँटो नहियेँ भेल छला। तँए तमाकुलक बहाना बना बाजल छेलौं। जहिना कहलयैन तहिना ओहो दरबज्जापर आबि बजला-

“केतौ बाहर गेल छेलह, किसुन?”

बजलौं-

“हँ, झंझारपुर हाट गेल छेलौं। परसुका मुड़नक नौत-हकार मात्रिकक अछि। ओहीक चीज-वौस कीनए गेल छेलौं।”

तैबीच अपनो चीज-वौसकेँ अँगनामे रखि दरबज्जापर आबि तमाकुल चुनबैक ओरियान करए लगलौं।

हंसराजो काका अपन हाथक कोदारि, खुरपी आ हँसुआकेँ चौकीक निच्चाँमे रखि बैसला। साइकिलसँ उतरल रही तँए पसेना चलैत रहए। ओना, समय मेघौन जकाँ छल तँए रौद मड़ियाएल रहइ, मुदा तैयो मासक धर्मे गरमी किछु छेलैहे। तमाकुल चुना काकाकेँ देलिऐन। ओहो तमाकुल मुँहमे लैत बजला-

“ऐ बेरका लगन तँ देखै-जोकर अछि!”

लगनक चर्च होइते बजलौं-

“ऐबेर कनाह-कोतर सभ उठि जाएत। जेकरो सबहक बिआह पौंरकाँ नइ भेल तेकरो सबहक आ जे ऐबेर बिआह करै-जोकर भेल तेकर, सबहक बिआह भऽ जाएत।”

‘सबहक बिआह’ आकि ‘कनाह-कोतर’ सुनि हंसराज कक्काक मन खुशी भऽ गेलैन। मुस्की दैत बजला-

“ई तँ बढ़ियाँ बात भेल किने। जेतेक धिया-पुताक बिआह भऽ जाएत ओतेक माइयो-बाप अपन कर्जसँ मुक्त हेबे करत किने।”

बजलौं-

“से तँ मात्र वएह माए-बाप ने जेकरा या तँ अन्तिम धिया-पुताक बिआह हेतै वा जेकरा एक्केटा हेतइ, सएह ने अपन धिया-पुताक कर्जसँ मुक्त हएत, मुदा जेकरा जेरक-जेर धिया-पुता छै ओ केना मुक्त हएत?”

हंसराज काका बजला-

“भलेँ सोल्हन्नी मुक्त नहियेँ हएत, मुदा ओते तँ हेबे करत किने जेते भार उतैर गेल रहतै। कर्जो-कर्जा आ चुक्तियो-मुक्तिमे अन्तर तँ अछिए। कियो सोलहन्नी चुका मुक्त होइए आ कियो अदहा-छिदहा चुका अदहा-छिदहा मुक्त होइए। तँए, जेते भार उतैर जेतै ओते जान तँ हल्लुक हेबे करतै किने।”

बजलौं-

“हँ, से तँ हेबे करत। मुदा तेहेन जुग-जमाना आबि गेल अछि जे केहनो-केहनो परिवार बेटीक बिआहमे हिल जाइए।”

हंसराज काका बजला-

“तइमे केकर दोख?”

‘केकर दोख’ सुनि मन ठमैक गेल। किएक तँ एक्के आदमी बेटाक बिआहमे राजा जकाँ बनि अधिक-सँ-अधिक सम्पैत बेटीबलासँ लिअ चाहैत अछि आ वएह आदमी बेटीक बिआहमे दाँत चिआरि बजैए जे समय बड़ खराप भऽ गेल अछि। जइसँ गरिबाहाकेँ बेटीक बिआह करब

पहाड़ोसँ भारी भऽ गेल अछि...।

बजलौं-

“दोख केकर रहत काका, दोख तँ सोलहन्नी लोकेक अछि। पहिनौं ने बिआह होइ छल, कहाँ एते भारी लोककेँ बुझि पड़ै छेलइ। परिवारमे जहिना आन-आन काज चलै छल तहिना ने क्रमिक ढंगे बेटा-बेटीक बिआहो चलै छेलइ।”

तमाकुलक थूक फेकैत हंसराज काका बजला-

“दोख सबहक अछि। तखन तँ सभकेँ एते गड़ भेटिये जाइए जे समैये एहेन बनि गेल अछि जे सभकेँ वाध्य भऽ करए पड़ै छइ।”

बजलौं-

“जेतए जे होइए से तेतए हौ, मुदा ठनकाक अवाज सुनि लोक अपन जान बँचबैले अपने माथपर लइए, तहिना ने...।”

बिच्चेमे हंसराज काका बजला-

“माथपर हाथ नेनहि की हएत, जेतए ठनकाकेँ खसैक छै तेतए खसबे करत किने। माथपर हाथ लिअ तैयो आ नइ लिअ तैयो, जेतए ठनकाकेँ गड़ भेटतै तेतए खसबे करत किने।”

बजलौं-

“हँ! से तँ खसबे करत। मुदा...।”

हंसराज काका बजला-

“मुदा-तुदा किछु ने।”

बातकेँ बदलैत बजलौं-

“काका, ऐबेर तँ अहाँक लक्ष्मी दहिन छैथ।”

‘लक्ष्मी दहिन’क माने भेल तीमन-तरकारीकेँ महग हएब। हंसराज काकाकेँ डेढ़ बीघा खेत छैन जइमे दस कट्ठा कलम-गाछी लगौने छैथ आ एक बीघा खेतमे बारहो मासक तीनू समैयक तरकारीक खेती करै छैथ

जइसँ परिवारक निमरजना करैत, हाथो-मुट्ठी गरमा कऽ रखिते छैथ। तैसंग ईहो छैन जे तीन बीघा तीन-फसिला खेत छैन, जइमे फसल-चक्रक मिलानसँ खेती करै छैथ, जइसँ अन्नक पूर्ति भइये जाइ छैन। खरीफक मौसममे तीनो बीघामे धानक खेती करै छैथ आ रब्बीक मौसममे दू बीघामे गहुम आ एक बीघामे दलिहन-तेलहनक खेती करै छैथ। ओना, अगता गहुमक खेती केने खेरही आ सुर्जमुखीक खेती सेहो कइये लइ छैथ जइसँ तेते उपज भऽ जाइ छैन जे बेचबो-बिकिनबो करिते छैथ...।

अपना जनैत हंसराज काकाकेँ बड़प्पनक बात कहलयैन मुदा मनमे जेना खेतीसँ किछु तकलीफ रहल होनि तहिना मुँह बिजैक गेलैन। बिजकैत मुहेँ बजला-

“किसुन, जे इच्छा रोपि अखन तक किसानी जिनगी बितेलौं से अखन तक पूर्ति नइ भेल, आ बुझि पड़ैए जे ऐ जिनगीमे हेबो ने करत।”

जिनगीक इच्छा आ ओकर पूर्ति नइ भेलासँ हंसराज काकाकेँ खेतीक विषपनसँ मन विसाइन-विसाइन भइये गेल रहैन, तँए एहेन विचार व्यक्त केने रहैथ। मुदा दरबज्जापर छैथ आ अपनो जँ ओहने बात बाजि आरो विसविसी जगा दिऐन से केहेन होइत। तँए पाशाकेँ आस दैत बजलौं-

“काका, दुनियाँ किछु हौ आ देशे किछु हुअ मुदा अहाँ तँ अपन जिनगीक बाजी मारिये नेने छिऐन!”

अस्सी बर्खसँ ऊपर हंसराज कक्काक उमेर छैन मुदा साठि बर्ख पूर्व जे अपन पैत्रिक सम्पैतकेँ आधार बना खेती-बाड़ीकेँ धेलैन से अखनो धेनहि छैथ। जइसँ परिवारक गुजर-बसरमे कहियो रीन-पैंच नइ करए पड़लैन, आ ने ओइ भाँजेमे पड़ला। जइ साल देश स्वतंत्र भेल तही साल हंसराज काका मैट्रिक पास करि कौलेजमे ढुकला जे देशक आजादीक चारि सालक पछाइत बी.ए. पास केलैन। हाइ स्कूलसँ पहिनहि जे देशक आजादीक लेल तिरंगा झण्डा उठौलैन से आजाद भेला पछातिये रखलैन। ओना, पनरह अगस्तकेँ साले-साल अखनो झण्डा उठा देशवासीकेँ

जगैबते छैथ, मुदा से केतेक जागल आ केतेक सुतल, से हंसराज काका जनिते छैथ। मुदा तैयो अपन स्वतंत्र विचारो आ स्वतंत्र जीवनक लेल स्वतंत्र पेशोक प्रति समाजकेँ जगाइये रहला अछि...। तैबीच हंसराज कक्काक घड़ीपर नजैर चलि गेल। एगारह बाजि रहल छल, अपनो ठंढाइये गेल छेलौं जइसँ नहाइक विचार मनमे उठिये रहल छल मुदा केना बजितौं जे काका अहूँकेँ नहाइक बेर उनहल जाइए आ हमरो बेर उनहल जाइए तँए अखन जाउ।

हंसराज काका बजला-

"किसुन, आइ पचास बर्खसँ कोसी नहैर लटकल अछि। अरबो रूपैआ सरकारी खजानसँ खर्च भऽ चुकल अछि, मुदा की लाभ नहैरसँ भेल अछि से कोनो केकरोसँ छिपल अछि। देखौआ सरकारो किसान लेल लोहाक बोरिंग नब्बे प्रतिशत सब्सिडी दऽ कऽ गड़ौलक, मुदा तइसँ किसानकेँ केते लाभ भेल से के नइ जनैए।"

अपनो ई काज देखलो अछिए आ देखतो छीहे जे एकोटा बोरिंग काज नइ कऽ रहल अछि। सबहक पाइप झझरी भऽ कऽ फुटि गेल, आ सभटा निकम्मा भेल अछि।

बजलौं-

"हँ, से भइये गेल अछि। मुदा लोको तँ लोके छी किने काका, जेकरा सुविधा भेटै छै सेहो आ जेकरा नइ भेटै सेहो, दुनू तँ एकरंगाहे अछि। भलेँ तैबीच कमीशनखोर आकि घूसखोर किएक ने उठि-बैसल हुअए। मुदा दिन-राति दुनू नइ कानैए सेहो बात नहियेँ अछि, कनिते अछि। मुदा बेवश लोक, बेवश किसान करबे की करत।"

हंसराज काका बजला-

"तइसँ की अपना सभ अलग छी। आकि ओकरे सभ जकाँ नइ कानै छी।"

बजलौं-

“से तँ छीहे, मुदा... ।”

हंसराज काका बजला-

“मुदा-तुदा किछु ने। हँसब आ कानब लोककेँ अपना हाथमे अछि। जे कानबक विचारसँ ग्रसित भऽ कनैक किरदानी करत ओ कनबे करत किने, मुदा जे हँसैक हंसक विचारकेँ अगुआ कर्म करत ओ हँसत नइ ते कानत। भलेँ नाटकक रंग-मंचपर किछु लोक कननी पात्र बनि अभिनाइये करए, मुदा ओहो ने देखौआ कननी कनिते अछि।”

बजा गेल-

“हँ, से तँ अछिए। मुदा अहूँ... । ”

‘अहूँ’ सुनिते हंसराज काका बुझि गेला जे हमरो दुखकेँ किसुन ओहिना बुझि रहल अछि जेना अनकर दुखकेँ बुझैए। हँसबो-हँसब आ कानबो-कानबमे अन्तर तँ अछिए, जे ओइ अन्तरकेँ नइ जनैए ओ दोसर रूपे कानबकेँ बुझैए आ जे ओइ अन्तरक मंत्रकेँ, माने अन्तरंग मंत्रणाकेँ जनैए ओकर कानबक सीमा दोसर होइत अछि। हंसराज काका बजला-

“किसुन, नहाइ बेर भऽ गेल, तँए नीक जकाँ सभ बात अखन नइ करब, किएक तँ जहिना कोनो रेलगाड़ीकेँ कोनो कारणे दू-चारि मिनट विलम भेने एके स्टेशन नहि, सभ स्टेशनमे विलम होइते चलि जाइ छै, जइसँ ओकर पहुँचैक जे गनतव्य स्थान रहल, ओइठाम समयपर नहियेँ पहुँचैए, तहिना ने मनुखोक अछि।”

अपना विचारे हंसराज काका बिना कौमा-पूर्ण विराम देने धुरझाड़ बाजि गेला मुदा अपने बुझबे ने केलौं, जइसँ मन झुझुआए लगल। मने-मन मनकेँ मजगूत केलौं जे जे राम से राम, सभ बात हंसराज काकासँ बजाइये कऽ छोड़बैन।

जहिना भौजेत नौतहारीकेँ खाइले नौत दइ छैथ आ पुछि-पुछि खुअबै छैथ तहिना अपन विचार हंसराज काका हमर बदरियाएल मेघकेँ बरदपनक लेल नौत दइए देलैन, तखन हमहीं की ओहन बुड़िवान छी जे

ओकरा सुर-वाण छोड़ि दुर्बान बनाएब। फेर मनमे उठल जे नहाइक बेरमे जे विलम हेतैन से अपना वर्णिक करनीसँ हेतैन आकि हमरा लरनीक चलैत हेतैन। अपनो कल परहक नहाएबमे देरी हएत, मुदा गंग-स्नान तँ हेबे करत किने। से नहि तँ जहिना भगता अपना गहवरमे कारनीक भूतकेँ बकबैए तहिना अपनो किए ने करी।

बजलौं-

“काका, हमरा मात्र एकटा फूलक काज छल आ अपने फूलक ढकिये आगूमे रखि देलौं, तइमे से एकटा फूल चुनि कऽ निकालब हमरे नानाक दिन छी, तँए अपने... ।”

हमर विचार सुनि हंसराज कक्काक मनमे हँसी उठि गेलैन मुदा हँसबक जे दोसर रूप अछि, माने केकरो अल्ढ़रपनपर हँसब, बुड़िपना छोड़ि आरो की हएत। तँए अपन देखौआ हँसीकेँ चिन्हौआ हँसीमे बदैल हंसराज काका बजला-

“बौआ किसनु, तूँ बाजल छेलह जे अहाँकेँ लक्ष्मी आबि गेली, से तूँ कोनो बाल-बोधक लड़कपन जकाँ नहि, बेटपन जकाँ बजलह। तँए, पहिने ओ बुझि लएह।”

जहिना ढलानपर ऊपरसँ निच्चाँ उतरैमे पएर अपने आगू बढ़ए लगैए तहिना हंसराज कक्काक विचार सुनिते अपनो पएर बढ़ए लगल। बजा गेल-

“से की काका?”

हंसराज काका बजला-

“देखह किसुन, तोहर जे काकी छथुन से हमर दिन-रातिक मालिक छैथ, जखने विलमसँ दरबज्जापर पएर देब, तखने ओ जवाब-तलब करए लगती! तँए, धड़फड़मे कनी-मनी कहि दइ छिअ बाँकी दोसर दिन कहबह।”

अपना मनमे बेसी-सँ-बेसी जिज्ञासा जागि चुकल छल तँए हंसराज

काकाकेँ पिंजरामे फँसबैत बजलौं-

“की बाल-बोध जकाँ बजलौं काका?”

हंसराज काका बजला-

“लक्ष्यक रस्ता पकैड़ चलब लक्ष्मीक आगमन भेल, आ लक्ष्यक सीमापर पहुँच जाएब लक्ष्मी पएब भेल, तइमे... ।”

अपन मनक मनियाँ जेना सोल्हो आँखि खोलि बुझैले तैयार भऽ गेल छल, एकाएक बजा गेल-

“से की भेल काका?”

काका बजला-

“बौआ किसुन, की कहबह! अपन मन हारब नइ कबूल रहल अछि मुदा दाबल जरूर बुझि पड़ि रहल अछि।”

जेतेक जल्दी बुझैक विचार जगल छल तेतेक बुझ पड़ाएल जाइ छल तइसँ मन खिनखिना लगल, तँए बिच्चेमे बजाइयो गेल छल। मुदा से हंसराज काका बुझि गेला। अपनोकेँ सम्हारैत आ हमरो सम्हारैत बजला-

“बौआ, जहिना देशक रीढ़ किसान छी तहिना ओइ रीढ़मे तेहेन घुन लगि गेल अछि जे ने जीबए दए रहल अछि आ ने मरए दए रहल अछि! घड़ीक पेनडुलम जकाँ बीचमे लटका झूलबैए।”

हंसराज कक्काक गप सुनि मनमे हुअ लगल जे कृष्ण जकाँ वृन्दावन आ राम जकाँ रामवनमे ने ते हंसराज काका बोहिया-भुतला रहला अछि जे एना ताशक गुलाम जकाँ तीन प्वाइन्ट बना बादशाहकेँ जीरो बना रहल छैथ! बजलौं-

“काका, नहाइ बेर भऽ गेल अछि, से नहि तँ अहीठाम नहा कऽ पहिने भोजन कऽ लिअ, पछाइत गप-सप्प हेतइ।”

हंसराज काका बजला-

“मुड़कट्टीमे कहि दइ छिअ, बीचमे टोक-टाक नइ करिहह। जँ

कोनो बात बुझैमे नइ आबह तँ ओकरा मनेमे गाड़ि कऽ रखिहह, दोसर दिन फरिछा देबह।”

समर्थन करैत बजलौं-

“बेस विचार केलौं काका..!”

हंसराज काका बजला-

“किसानी जिनगीमे ई पचासियम बर्ख बीत रहल अछि। मुदा अखनो तक ने अपना हाथ-जुतिमे पानि आएल आ ने बीज आएल आ ने खेतीक करैक कला, जइसँ अपन मन खिन्न भऽ कानि रहल अछि, नहि कि पेट जरने कनै छी। खेत हमर आ बीज आन देशक, ई केतए तक उचित अछि! मनमे प्रवल इच्छा छल जे सभ-कथुक बीज अपने बनाएब, मुदा से आइ तक नइ भेल। तँए मन झुझुआ कऽ कानि रहल अछि।”

हंसराज कक्काक असल बात सुनि एकाएक जेना भक्क खुजि गेल।

❑ **साभार : देखल दिन**

अधखरूआ

दूटा चेला संग गुरु घुमैले विदा भेला। गामसँ निकैल पाँतरमे प्रवेश करिते बाध दिस नजैर पड़लैन। सगरे बाधक खेत सभमे माटिक ढिमका बनौल छल। तीनू गोरे रस्तेपर सँ हियासि-हियासि देखए लगला जे एना किए छइ। कनीकाल गुनधुन कऽ दुनू चेला गुरुकेँ कहलकैन-

“अपने एतै छाहैरमे बैसियौ, हम दुनू भाँइ देखने अबै छी।”

‘बड़बढ़ियाँ’ कहि गुरु ओतै बैस रहला। दुनू चेला विदा भेल। कातेक खेतसँ ढिमका देखैत दुनू गोरे सौंसे बाधक ढिमका देख, घुमि आएल। सभ ढिमकाक बगलमे कूप खूनल छेलइ। मुदा कोनो कूपमे पानि नै छेलइ। खाली एक्केटा कूपमे पानियोँ छेलै आ ढेकुलो गाड़ल छेलइ। ओना, तँ सौंसे बाधे खीड़ाक खेती भेल छल मुदा सभ खेतक लत्ती पानिक दुआरे जरि गेल रहए। खाली एक्केटा खेतमे झमटगर लत्तियो रहै आ सोहरी लगल फड़लो छेलइ।

गुरु लग आबि चेला कहलकैन-

“सभ ढिमका कातमे कूप खुनल छै मुदा पानि नै छै खाली एक्केटा कूपमे पानियोँ छै, ढेकुलो गाड़ल छै आ खेतमे सोहरी लगल खीड़ो फड़ल छइ।”

चेलाक बात धियान सँ सुनि गुरु पुछलखिन-

"एना किए छइ?"

दुनू चेला चुप्पे रहल। चेलाकेँ चुप देख गुरु कहए लगलखिन-

"एहेन लोक गामो-घरमे ढेरियाएल अछि जे चट मंगनी पट बिआह करए चाहैए। जेते उथ्थर कूप छै जइमे पानि नै छै, ओ खुननिहारो सभ ओहने उथ्थर अछि।

कोनो काजकेँ -चाहे आर्थिक होइ आकि वौद्धिक आकि समाजिक- अगर ढंगसँ नै कएल जेतै तँ ओहने हेतइ। बीचमे जे एकटा कूप देखलिऐ ओ खुननिहार किसान मेहनती छैथ। अपन धैर्य आ श्रमसँ माटिक तरक पानि निकालि खीड़ा उपजौने छैथ। तँए हुनका मेहनैतक फल भेट रहल छैन। बाँकी सभ कामचोर अछि तँए आशपर पानि फेरा गेलइ।"

❑ **साभार : तरेगन**

मोहरा

मास दिनक पछाइत पता लगल जे कुरसोंवालीक सराधो भऽ गेल। गामक ओहन काज जे एक-दिना आकि एक-क्षणा नइ छी, जे चुपचाप भऽ जाएत। सराधक पाछू क्रिया-कर्म आ भोज-भातक संग नह-केश अछि तइसँ पहिने तेराइतिक भोजो आ छौरझँपी होइए, तहूसँ पहिने लहाश जरौल जाइए। एते नमगर-चौड़गर काज आ बुझबो ने केलौं..!

फेर अपनेपर नजैर पड़ल, नजैर पड़िते जखन मास दिनकेँ गुनलौं तँ केतौ खोंच-खरोंच नइ बुझि पड़ल। माने जहिना सभ-दिना जिनगी अछि तहिना ऐछे, तखन किए ने बुझलौं। आइ जँ केतौ मास-दिनक तीर्थ-वर्तमे गेल रहितौं आकि कोनो महानगरे घुमैले गेल रहितौं, सेहो तँ नहियेँ केतौ गेलौं हेन। मुदा मनमे ईहो जिज्ञासा तँ जगले रहए जे जे कुरसोंवाली एक समय गामक रंगमंचपर मुख्य नचनिहारि छलि, तेकर सराध केहेन भेल?

फेर भेल जे मास दिनक पुरान गप छी तखन जँ केकरोसँ पुछबे करबैन जे कुरसोंवालीक सराध भऽ गेलैन तँ ओ मुँह दुसि कहबे करता किने जे तूँ गाममे नइ छेलह जे देखतहक आकि सुनितहक जे पहिने सराध भेल आकि मुइल, एतबो ने बुझल छह।

कोनो गरे ने देखिऐ जे की करब। मुदा मनमे बुझैक जिज्ञासा तँ रहबे करए।

विचारलौं जे रस्ते-रस्ते दछिनबरिया बाधक खेत देखैक बहन्ने जाएब, ओही बीचमे कुरसोंवालीक घर पड़ै छइ, जँ कोनो सुराग बुझि पड़त तँ गप खोड़ि देबै, माने चर्चा चालि देबइ। जखने चर्चा उठत कि जहिना धिया-पुता चौमास खेतक अल्लू उखड़लाहा वाड़ीकेँ कियो खुरपीसँ तँ कियो ठेंठिया कोदारिसँ चलिया-चलिया नमहर अल्लूसँ किड़ी तक बीछ लइए तहिना सभ बीछा जाएत...।

यएह सोचि दच्छिन-मुहेँ विदा भेलौं।

संजोगो नीक बैसल। कुरसोंवालीक बेटा–सिंहेसरा उत्तरे-मुहेँ अबैत रहए। खुटियाएल केशो देखलिऐ आ रंग झड़ल धोतियो बुझि पड़ल। बुझि एना पड़ल जे नवका धोतीक पाइढ़ ओहिना चक-चक करैत जेहेन नव रंगलमे चक-चकाइत रहैए। लगमे अबिते मनमे भेल माइयक सराधक विषयमे सिंहेसरासँ पुछिऐ।

मुदा फेर भेल जे जँ नइ मरल होइ तखन तँ अनेरे ई कहि गरियौत जे हमरा माएकेँ जीवितेमे सराधक बात पुछैए। भाय! सरधा ने जीवितमे होइ छै मुदा सराध तँ मुइला पछाइते होइ छइ। अन्तर एतबे ने अछि जे घरक अधिकार धऽ घर चैल जाइए। आगूमे देखते सिंहेसरे बाजल–

“काका, गोड़ लगै छी, माए-बापक करजासँ फारकती भेल।”

‘माए-बापक करजा’ सुनि मनमे ठहकल जे निसचित माइक सराध कऽ निचेन भेल अछि। गपक पन्ना भेटल। पन्ना पकैड़ पुछलिऐ–

“नीक जकाँ कर्जासँ फारकती पौलह किने?”

‘नीक जकाँ फारकती’ सुनि सिंहेसराक जेना छाती दहैल कऽ कुड़बुड़ा उठलै। बाजल–

“कक्का, जिनगी भरि जेकरा सेवलक ओहो देह चोरा लेलक।”

सिंहेसराक बात भाँजेपर ने चढ़ल जे की कहलक। पुछलिऐ–

“से की?”

बाजल–

“कक्का, तोरा सभकेँ ते बुझले छह जे माइयो आ बाबूओ दुनू परानी जिनगी भरि खुशीलाल कक्का ऐठाम खटल, जे कमाएल-खटाएल से खेलक-पीलक, हमरो पोसलक। हमरा बिआहो कऽ देलक। गाममे केते कमाइये होइ छै जे औझुका लोक जकाँ गुजर कैरतौं तँए पंजाब चैल गेलौं। एम्हर बाबूओ मरि गेल। पनरहे दिन गेना भेल रहए, भड़ो जोकर पाइ नइ कमेने रहौं जे अबितौं, नइ एलौं। माइये आगियो देलकै आ सराधो केलकै।”

सह दैत कहलिऐ–

“जहिना बेटाकेँ अधिकार अछि तहिना ने पत्नियोंकेँ अछि, नीके भेलह।”

बाजल–

“नीके की हएत कक्का, तखन तँ गरीब लोकक माए-बापक सराध भगवाने भरोसे होइए, सएह भेल।”

झमान भऽ सिहरैत सिंहेसराक मन देख कहलिऐ–

“पार-घाट तँ लगिये गेलह किने?”

झुझुआइत सिंहेसरा बाजल–

“पार की लागत तखन तँ अपन हारल लोक बाजिये कऽ की करत।”

जे बात बुझैक जिज्ञासा छल ओ तर पड़ि गेल। ऊपर चैल आएल पिताक सराध। माइक सराध दिस बातकेँ बढ़बैत पुछलिऐ–

“माइयक कहह?”

‘माए’ सुनि सिंहेसरा विचलित होइत बाजल–

“कक्का, बाबूकेँ मुइना थोड़बे दिनक पाछू माए दुखित पड़ि गेल। अपने गामोमे ने रही, खुशीलाल कक्का एको दिन खोजो-पुछाइर ने केलखिन आ एक पाइक गोटीकेँ के कहए। भनसिया समाद देलक। जे पाइ कमेने रही से पठा देलिऐ, अपने जँ चैल ऐबतौं तँ ओहो कमाइ ने होइत।”

बिच्चेमे कहलिऐ–

“से ते नीके केलह।”

‘नीक’ सुनि सिंहेसराक बोल ने आगू उठै आ ने पाछू होइ। हेबो केना करैत, कोनो कि समाजमे छपित बात अछि जे लोकक किरदानी भेड़िया-धसान जकाँ छइ। अधलोकेँ तेते नीक कहत जे राड़ीक फूल जकाँ अपने हवामे उड़ैत अकास चढ़ि जाइए, आ अकास चढ़ल काजकेँ धकियबैत-धकियबैत खेत-कातक रस्ता जकाँ बहुपेड़ियाकेँ एकपेड़िया बनबैत नाओं मेटा खेते बना लइए आ जखन खोज-खबैर होइ छै ते कहैए जे सर्वेक खतियानमे ने खत्ते-खेसरा चढ़ल अछि आ ने नक्शामे नक्शे बनल अछि। मुदा सिंहेसरा से नइ केलक, अपन इमानकेँ इमनदारीसँ अड़ैजैत बाजल–

“कक्का, तोरा लग मुँह उठबैत लाज होइए, मुदा बाप-पित्ती तँ तोहीं सभ ने भेलह, बेटा-भातीज जँ गलतियो करत तँ तोहीं सभ ने तेकर निमरजना करबहक।”

सिंहेसराक बात सुनि जेना हृदयमे धक्का लगल। धक्को केना ने लगैत, एकटा बाल-बोध ऐसँ बेसी कहिये की सकैए। पीठ उघारि आगूमे देत जे कक्का लिअ गलती केलौं एक साए जूता मारू। मनुख विवेकी छी, लाज ओकर आभूषण छिऐ, जे अंगीकार केला पछाइत लोककेँ रहिये की जाइ छै...।

मनमे जेना उड़ी-बीड़ी जकाँ लगल। मुदा गुण भेल जे सिंहेसरे

बाजल– “कक्का, जे बुढ़ियाक धारलिऐ से ते करबे केलिऐ।”

मुदा की धारलिऐ, की केलिऐ की नइ केलिऐ, की करक चाही, की नइ करक चाही..?

एक संग अनेको प्रश्न मनमे नाचि उठल। नचैत मन सिंहेसराक पिता–ढोरबापर पड़ल। सुधंग लोक, खुशीलालक एकटा महींसक सेवाक सोल्होअना भार ढोरबापर, यएह जिनगी यएह दुनियाँ रहैन। कुरसों बिआह भेल रहैन। कुरसोंक जइ टोलमे बिआह भेल, ओ अगुआएल लोकक टोल, ओइमे एकघरा। माने सिंहेसराक माइयक चिष्टो-चार आ बजै-भुकैक ढंग सेहो अगुआएल। सुधंग पति पेब कुरसोंवाली एक-छत्र परिवारक गारजन बनि गेलि।

सत्तैर-अस्सीक दशकमे मिथिलांचलमे भूमि आन्दोलन जोरपर छल। आने गाम जकाँ हमरो गाममे पाहीपट्टीबलाक आधासँ बेसी जमीन। बटेदार जगि कऽ बटायदारी आन्दोलन केलक। ओना, गामबलाक खेत नहि मुदा बहरबैयाक प्रलोभन जे अहीं सभकेँ सभटा खेत सुमझा देलौं। लोभमे गामक लोक संग भऽ गेल। जमीनेक लोभ कुरसोंवालीकेँ सोझहामे रखि, नेता बना टोलमे ठाढ़ कऽ देलक। बुझलो बातमे कुरसोंवाली लोभा गेली। बुझल बात ई जे जे खेत बटाइ करैए ओकर तँ हक बनिते छइ। मुदा मुफ्तक माल केकरा गाड़ा लगै छै जे कुरसोंवालीकेँ लगितै, ओ ओइ आन्दोलनमे चारित्रिक गुण बिसैर ओइ बटाइ जमीनपर अपन हक बनबैले छोट-छोट खोपड़ीनुमा घर बनबा, ओइमे आगि लगबा, गामक तीस-पैंतीस गोरेक बीच ओइ अगिलग्गी केसमे हमरो नाओं घोंसिया देलक। वएह कुरसोंवाली जे मोहरा बनि गाममे एते भारी फसाद केलक। तेकरे सराधक चर्च छी। निरीह, निरदोस सिंहेसराकेँ पुछलिऐ–

“बुढ़ियाक मृत्यु नीक जकाँ भेल किने?”

हमर बात जेना सिंहेसराक मनकेँ बेध देलकै। ओकरो अपन माइयक किरदानी मनमे ठहकैत रहइ। जहिना विश्व मोहिनी लग नारद बाबा बगलेमे शिवजीक दूत देख बानरक मुँह बनौने, तहिना बुझि पड़ल। मुदा आब उपाइये की अछि। यएह ने जे ओ गामक इतिहासक एक अंश भेल।

'मृत्यु' सुनि सिंहेसरा बाजल–

"कक्का, हम जे दू सालसँ पंजाब जाए लगलौं हेन, तेकर मारख खुशीलाल काकाकेँ भऽ गेलैन। ई बिसैर गेलखिन जे सरकारो नोकरीबलाकेँ जनम भरि पार लगबै छइ।"

सिंहेसराक बात सुनि बुझि पड़ल जे माइक पीड़ा ओकरा सता रहल छइ। कहलिऐ–

"से की?"

सिंहेसरा बाजल–

"कक्का, जखन माए दुखित पड़ल, अपने गाममे नइ रही, घरवालीक समाद गेल, जे रूपैया रहए से पठा देलिऐ। जँ अपने गाम चैल ऐबतौं ते ओहो आमदनी केतएसँ आनितौं।"

बजलौं किछु ने मुदा मुड़ी तँ डोलाइये देलिऐ। डोलैत मुड़ी देख जेना सिंहेसराकेँ सह भेटलै। बाजल–

"कक्का, बेमारी आगू हम सभ सकबै, केते कमाइये अछि। बुढ़ियाक दवाइ छुटि गेलइ। पछाइत बहीन आबि अपना ऐठाम लऽ गेलै। ओहो ते हमरे जकाँ अछि। ओहो नइ सकलै। बेमारी बैढ़ते गेलइ। ओत्तै मरि गेल। ओत्तै जराओलो गेल।"

जेना साँस छुटल, बजलौं–

"तँए ने बुझने छेलौं। भोज-भात नीक जकाँ केलहक किने?"

सिंहेसराक आँखि ढबढबाएल। बाजल–

“केकरा नइ माए-बापक सेवाक लिलसा रहै छइ, मुदा ओते वैभवो रहत तखन ने पार लागत।”

कहलिऐ–

“अखन काजक बेर अछि, तोहूँ जाह अपन काज देखहक आ हमहूँ खेत देखैले जाइ छी।”

❑ **साभार : शुभचिन्तक**

भँसियाएल बाल-बोध

आजुक बाल-बोधक–जे निर्विकार गुणक अछि–आगूक बाट की होइ, बाल-बोधेक प्रश्न नहि, परिवारक अभिभावक आ समाजक संग देशक सेहो छी। एक-दोसरमे सभ सटलो छी आ हटलो छी, तँए दुनू दृष्टिसँ देखैक खगता तँ भइये गेल अछि।

मिथिला दर्शन, जे कहियो विश्व-दर्शनक चोटीक शिखरपर शीर्षासन छल, जइसँ लाख विषमताक बाबजूदो मिथिलावासी शान्त-चित्त आ शान्त-सोभावकेँ धारण केने आबि रहल छैथ, ओइ धरतीपर एहेन रूप किए बनि गेल अछि जे भैयारीक बीच चलैन बनि गेल- 'भाए-भैयारी महींसिक सिंग, जखने जनमल तखने भिन्न।' हँ, बात जँ भाए-बहिनक बीच रहैत तँ एक सीमा तक उचितो भेल। उचित ई भेल जे लैंगिक भेदक संग जीवन निर्वाहक स्थान सेहो बदैलते अछि। मुदा जैठाम भाए-भैयारीक बीच जँ एहेन विचार चलत तैठाम तँ किछु विचारणीय प्रश्न आगूमे एबे करत। विचारणीय ई जे जखन परिवारेमे विखण्डित विचार चलत तखन समाज आ राष्ट्र तँ दूर भेल।

जँ भाइ-भाइक बीच एहेन विचारक धार बहत तँ निसचित रूपे ओ समुदायिक जिनगीकेँ प्रभावित करबे करत। जखन सहोदर भाएमे विचारक दूरी बनत, तखन परिवारजन माने दादा-दादी, माता-पितासँ

आगू बढ़ि भौजाइ-भावो होइत भातीज-भतीजी दिस बढ़बे करत।

प्रश्न अछि आइ धरि जे दू या तीन या चारि या ओहूसँ बेसी भैयारीक बीचक संयुक्त परिवार चलैत आबि रहल अछि, जइमे बेटा-बेटीक जन्म होइत अछि। दहेजक हिसाब वा पढ़ै-लिखैक हिसाब जे बेटा-सेने रहैत अछि ओ बेटी-सेने थोड़े अछि। ऐमे समाजोक दोख कम नइ कहल जा सकैए। माने ई जे आजुक परिवेशमे तीस लाख रूपैआ खर्च करि कऽ बेटीकेँ डाक्टरीक शिक्षा दियौ आ पढ़ाइक पछाइत जखन ओ बिआह-दान करै-जोकर हएत तखन तीस लाख बिआहमे खर्च करू। जँ से नइ करब तँ समुचित जोड़ा लगा समुचित जिनगी नइ बना सकै छी? भलेँ बेटा बेर सभ सूदि-मुड़ि ऊपर किए ने भऽ जाए...।

हँ! एक परिस्थितिमे लाभक भऽ सकैए जे जँ परिवारमे बेटा-बेटीक संख्या बरबैर हुअए, मुदा से तँ निसचित नइ अछि। कोनो परिवारमे बेटाक बाढ़ि बेसी अछि, तँ कोनो परिवारमे बेटीक बाढ़ि नइ अछि सेहो तँ नहियेँ कहल जा सकैए। वौद्धिक विकास शिक्षा आ शिक्षण संस्थासँ प्राप्त होइए, तँए मूल विषय छी।

चारि बजेक समय। पता लागल जे लाल भाय दुखित पड़ि गेला अछि, तँए भेँट करए हुनका ऐठाम गेलौं। रौद तँ मरियाएले रहै मुदा तैयो लाल भाय दलानक आगूमे मोथीक विछानपर पतरकिये चद्दैर ओढ़ि पड़ल रहैथ। लगमे जाइते पुछलयैन-

"भाय, मन बेसी गड़बड़ तँ ने अछि?"

खनखनाइत लाल भाय बजला-

"ने जनम रोगी छी आ ने जनम रोग अछि, मौसमी झटका छी। कातिक-आसिन तँ ओहिना रोगाह मास छीहे।"

लाल भाइक सूर-मे-सूर मिलबैत बजलौं-

"हँ, से तँ छीहे। कियो अपन चालि छोड़लक हेन जे कातिके अपन

छोड़त।”

हमर बात सुनि लाल भाय की बुझलैन से तँ ओ जानैथ मुदा मन जेना खनहन भेलैन तहिना बुझि पड़ल। देहक रोगकेँ पछाड़ैत लाल भाय उठि कऽ बैसैत बजला-

“नहि कोनो मारुख रोग नइ अछि, तखन तँ कनी सरदी-खाँसी भेने देह गरमाइए गेल अछि।”

हमरो हरल-ने-फुरल, लाल भायकेँ पुछि देलिऐन-

“काज करै दिस मन बढ़ैए की नहि?”

मुस्की दैत लाल भाय बजला-

“सएह ने अछि। तँए ने चद्दैर ओढ़ि मुइल-मुँह सन भेल छी। जँ से रहैत तँ की ऐ सरदी-खाँसीकेँ गुदानितिऐ। ओहुना तँ देहमे कफो ऐछे आ सुखलो खाँसी होइते अछि।”

निर्णय करैत बजलौं-

“तखन तँ भेल राजरोग?”

‘राजरोग’ सुनि लाल भाय उन्टा देलैन-

“से की?”

हमहूँ सरपट चालि धरैत बजलौं-

“राजरोग भेल जइमे खाइ-पीबैमे कोनो परहेज नहि, मुदा काजक बदला चद्दैर ओढ़ि रौद तापब।”

लाल भाइक मनमे कोन बातक कुवाथ भेलैन से तँ ओ जानैथ, मुदा अपनाकेँ सम्हारैत बजला-

“अँए हौ गौरी, दुनू भैयारी जे एकठाम बैस सुख-दुखक विचार करै छी ओ काज नइ भेल?”

लाल भाइक बातसँ बुझि पड़ल जे जे सोचि जिगेसा करए आएल

छेलौं से बात नइ अछि। मौसमी रोग छिऐन, मासूमे चालिसँ नीक भऽ जेतैन। तही बीच लाल भौजी दुनू बेटाकेँ अगुएने हरिहर क्षेत्रसँ आपस पहुँचली? सवारीक सुविधा आ एन.एच. बनने एते तँ सुविधा भइये गेल अछि जे जरो-जनानी आ धियो-पुताकेँ जँ देखै-सुनैक हेतइ तँ घुमि औत। आँगनमे लाल भौजी झोरा-झँटी खोलए लगली आ छोटका बेटा–जे सात सालक अछि आ प्राइवेट स्कूलमे फाइबमे पढ़ैए–बैगमे सँ प्लास्टिकक स्टील सेट बन्दूक साइजक खेलौना नेने दरबज्जापर पहुँचल। दरबज्जापर अबिते हमरो नजैर ओकरापर पड़ल आ लालो भाइक पड़लैन। तैबीच ओ बच्चा हाँइ-हाँइ तीन-चारि बेर गोली भरि-भरि अवाज करैत लाल भायकेँ कहलकैन-

"पापा, आब निशान लगबै छी!"

अपने तँ ई सोचि अपनाकेँ पाक-साफ केलौं जे आन परिवारमे आगू भऽ कऽ किछु बाजब उचित नहि, तहूमे जखन लालो भाय छैथे आ माइयेक संग कीनबो केने हएत, संगे अनबो केलक आ सोझेमे निकालि चलाइयो रहल अछि। ओना, राय-विचारक प्रश्न तँ छीहे जे बच्चाक हाथमे पाँखिबला कलम सन्देश नहि, बन्दूक सन्देश अछि, तैठाम...। तँए ऊपर-निच्चाँ देखैत विचारैत रही। बच्चापर सँ नजैर हटा लाल भायपर देलिऐन तँ बुझि पड़ल बोखार तेज भेल जा रहल छैन, किएक तँ देह-हाथ थरथराए लगल रहैन। मुदा बाजैथ किछु नहि। दुविधामे पड़ि गेलौं। दुविधा ई जे कोन बेमारीक आक्रमण बेसी भेल जा रहल छैन से तँ अपने ने जनैत हेता, ओ तँ मुँह खोलला पछाइते ने बुझब।

तैबीच लाल भाय चद्दैर सेरिया मुँह झाँपि सिरमापर ओंघरा गेला। ओंघरेलापर मनमे रंग-बिरंगक शंका उठए लगल। सरदियो-खाँसीसँ ने दम्मा-टी-बी होइए। बेमारी की केकरोसँ पुछि कऽ अबै छै, ओ तँ तरे-तर जहिना चाउरक कोठीमे मूस पसि जाइ छै, तहिना रोगो-वियाधि पैसैए। ..फेर भेल जे भऽ सकैए जे तरेतर मुँहक बोलतिये ने अक्रान्त भऽ गेल

होनि, जइसँ बकार नइ फुटैत होनि, तँए अगुरवारो पुछब अधला थोड़े हएत। बजलौं-

“भाय, बोखार तेज चढ़ि गेल?”

लाल भाय जेना अपन भविस देख रहल छला तहिना दुनू आँखिसँ सौनक बून झहरए लगल छेलैन, मन कलैप रहल छेलैन जे समाजमे जे हवा चलि रहल अछि, ओ समाजक बाल-बोधकेँ केमहर लऽ जाएत! दहो-बहो नोर चुबबैत लाल भाय बजला-

“बौआ, भरि दिनक जेतेक समय ई बच्चा स्कूलमे दऽ रहल अछि, तइ अनुपातमे तँ हमरा संगे नइ छै, सएह ने बुझि पेब रहल छी जे एना भेने केना हएत।”

तही बीच लाल भौजी हरिहर क्षेत्रक सनेस नेने पहुँच गेली। चद्दैर ओढ़ल देख लाल भायकेँ कहलकैन-

“रस्ताक झमारल छी हम आ मुँह-कान झाँपि सुतल छेलौं अहाँ?”

मुँहपर सँ चद्दैर हटबैत लाल भाय बिना किछु बजने देह-हाथकेँ सोझ करए लगला। उठि कऽ बैस गेला। लाल भाइक मनमे जेना अनोन-बिसनोन होइत रहैन तहिना बुझि पड़ल। संगे ईहो बुझि पड़ल जे जखन भौजीकेँ कोनो जवाब नहि भेटलैन, तखन सोझे भोज खाइले तँ नइ एलौं जे हरिहर क्षेत्रक परसादी खा चलि जाएब...।

फेर मनमे उठल- हरिहर क्षेत्र तँ ओ जगह छी जैठाम गराहक संग गजकेँ लड़ए पड़ै छइ। सबहक अपन जिनगी अछि तँए अपना-ले तँ अपने ने करब। जेते लोक आकि जीव-जन्तु अछि सभकेँ अपन-अपन दिन-दुनियाँ छै, अपन-अपन हाथ-पएर छै तखन तँ सभकेँ ने अपन-अपन जीबैक जोगार करए पड़त...। बजलौं-

“भौजी, मेलाक हरियरी नीक रहलै किने?”

ले बलैया! मुँह बिजकबैत भौजी बजली-

“मेलाक रोहैने खतम बुझि पड़ल। पनरह बर्ख पहिने जे गेल रही ओ मेला आ ऐ बेरक मेलामे अकास-पतालक अन्तर बुझि पड़ल।”

जिज्ञासा करैत पुछलयैन-

“से की?”

भौजी बजली-

“पैछला जे गंगाक लहैर उठल से छाती भरि पानि मेलाक जगहमे लगि गेलइ। खाधि-खुधिमे अखनो पानि छेलैहे। तेहेन दल-दल माटि छेलै जे पएर चपइ।”

बजलौं-

“माल-जाल, हाथी-घोड़ाक बजार केहेन छल?”

भौजी-

“बुझि पड़ल जे लगे-पासक वेपारी सभ छैथ जे भोरे आनि कऽ मेला लगबै छैथ आ साँझू पहर चलि जाइ छैथ।”

पुछलयैन-

“हाथी-घोड़ाक की स्थिति छेलइ?”

बजली-

“कहबे तँ केलौं जे लग-पासक वेपारीटा-क मेला छल। पचासोसँ निच्चेँ गाए, महींस आ घोड़ा मिला कऽ छेलइ। हाथीक छुतियो ने रहइ।”

बजलौं-

“से एना किए भेल?”

एक्की-दुगी भौजी नइ छैथ, लाल भाइक पत्नी छथिन। पढ़ल-लिखल स्नातक छैथ। बजली-

“आब लोक चरिचकिया गाड़ीपर ओङैठ कऽ चलत आकि हाथीपर

देह डोलबैत चलत!”

बजलौं-

“आन-आन बजार केहेन छेलइ?”

झपैट कऽ भौजी बजली-

“ओ सभ जे अबितै से ओतेक आन्हर अछि, जे अनेरे थाल-खीचमे आबि महामारीक शिकार होइतए।”

बजलौं-

“तखन तँ ओ सभ होशियारी केलक?”

भौजी बजली-

“ओ सभ कोनो कि नइ बुझलक जे इलाकार्कें बाढ़ि बेसी तवाह केने छै, लेबाले-देबाले अछि, तखन अनेरे किए देह जतबै आ मच्छर कटबैले जाएब।”

लाल भाय बाजैथ किछु ने, मुदा मनमे तरेतर जेना कुही होइत रहैन तहिना बुझि पड़ल। मुदा के कुहि रहल छैन आ के कुहा रहल अछि, भरिसक तैपर सेहो नजैर गड़ि रहल छेलैन।

❑ साभार : बीरांगना

कथाक्रम : पंचदेव (1-100)

एक तम्मा सिदहा
एक घोंट पानि
करतब
पहाड़क बेथा
उदय-प्रलय

खेतक बँटवारा
पैंतीस साल पछुआ गेलौं
माघक चाह
घबाह ट्यूशन
चोर-सिपाही

उरीन
गुणहीन
बड़की माता
पोखला कटहर
राकशे रहि गेलौं

मुफतिया माल
हेराएल जिनगी
करिछौंह मुँह
कियो ने पुछैए
अँगनेमे हेरा गेलौं

वर्थ डे
सजल स्मृति
सेहन्ता
धोखा
एक मुठी घास

डुमैत जिनगी
हूसि गेल
ठेलाबला
जीविका
धर्मनाथ

किरदानी
भरमे-सरम
धोखा केतए भेल
मीनी भ्रष्टाचार
सोमनाकाका

पटियाबला
रिक्साबला
पसेनाक धरम
दूधबला
केना जीब?

सझिया खेती
सतभैंया पोखैर
दनियाँ डाबा
अर्जुन रोग
दोसराइत
चुनवाली
रेहना चाची
बुधनी दादी : 2
पुरनी नानी
एकबोलिया दादी

उकड़ू समय
अवाक
कलंक : 1
बताहे बताह बनौलक
भैयारी हक
लछनमान
बिटगरहा
गलफूलू
लाही
पल भरि

केकरा-ले केलौं
केकरो कियो ने
टुटली मरैया
बगबाइर
अपन मन अपन धन
छातीक हार
कोढ़िया सरधुआ
पहपैट
भोरक सपना
खोंटकर्मा

एक धाप जमीन
भैयारी
साझी
सूदि भरना
सीमा-सरहद
गपक पियाहुल लोक
धरमूदासक अखड़ाहा
हमरा नीक नहि लगैए
कर्ज : 1
आब नइ आगि लगैए?

घूर
एगच्छा आमक गाछ
प्रीगर शत्रु
दहेजुआ गाए
गठूलाक गारि

गण्डा
अब-तब
झूठे
उजगी
जेना हाथी रही

कनी हमरो सुनू
नोकरिहारा
अनका बेर ओंघी
लगबे ने कएल
ओ दिन

पान पराग
फोंक मकड़
झकास
ठोररंगू
हकार

ओझरी
दोती बिआह
कचहरिया रोग
नटकिया गति
भारीपन भार बनि गेल

दिन घटि गेल
पछताबा
परिवारक प्रतिष्ठा
पागलखाना
खाए चाहैए

गामे उपैट गेल
खतियाएल घर
किछु ने फुरैए
तिलकोरक तरुआ
पटोर

बेटाक चलैत
उग्रघारा
बेटीक कुभेला
दोहरी हाक
खिलतोड़

बापक चलैत
गाम बिसैर गेल
ठकहरबा
समैयक बेरबादी
न्याय चाही

रिजल्ट
बाल बोध
अपन गारि अपन दुआरि
सरही सौबजा
अउतरित प्रश्न

पनियाहा दूध
कन्हा भँट्टा
फलहार
गावीस मोइस
निनिया देवीक आराधना

कनियाँ-पुतरा
मानसरोवर यात्रा
गामक शकल-सूरत
मितक प्रयोजन
चैन-बेचैन

पाइक इज्जत
माघक घूर : 1
मधुमाछी
मति-गति
नैहराक धाड़

माघक घूर : 2
चहकल विचार
राक्षसक झड़
सद्विचार
पोखरिक सैरात

मनकमना
कटौज
किछु ने
हथियाएल खुरपी
झुटका विदाइ

खुदियाएल
गलती अपने भेल
बत्तु
असिरवाद उलैट गेल
उड़हैड़

खटहा आम
बुधि-बधिया
एकता
उमेरक लेहाज
केते लग केते दूर : 1

जितिया पाबैन
धर्मक असल रूप
शिनीची सिनेह
नवान
असुध मन

महिरम
हाथक जिनगी
सिखबैक उपय
दनगर घास
ढकरपेँच

मुसरी आ घोड़ा
जाड़ फाटि गेल
मुँहक बात मुहेँमे
कनीटा बात
गोहिक शिकार

जारैनक दुख मेटा गेल
इज्जत उतैर गेल
चापाकलक पाइप
घसवाहि
चटवाह

दुरकाल
गामक कटान
मेटाइत जिनगी
कपटी मित
अजाति

परदेशी बेटी
घरदेखिया
ऊँच-नीच
ऑपरेशन
फेर पुछबैन

समधीन
कनमन
नमहर घरक चोइर
पटोटन
पुरुषार्थ

पेटगनाह	डीहक बटबारा
गंगा नहेलौं	मूलधन
बकठाँइ	छूआ
गुलेती दास	लफ साग
खर्च	नहरकन्हा
डॉक्टर हेमन्त	अपन सन मुँह
मनुखक मूल्य	पाप आ पुण्य
तीन जुगिया भाय	चोरक चोरबती
आश्रम नहि सोभाव बदली	मातृभूमि
मायराम	कटा-कटी
शुभचिन्तक	हरदीक हरदा
विधवा बिआह	बेरपर
वैष्णवी भगवती	झगड़ाउ-झोटैला
प्रेमी	फॉगु
शंका	बुड़िबकहा बुड़िबक बनौलक
मुइलो बिसेबैन	उलबा चाउर
प्रतिभा	पतझाड़
केतौ नै	धरम काँट
हमर कोन दोख	तिलासंक्रान्तिक लाइ
असगरे	कठफल

असहाज
बाबा बेलेश्वरनाथ
भोँटक गहमी
जेतए जे हौउ
नौमीक हकार

बेटीक लिलसा
पुरान साड़ी
अभिनव अनुभव
अड़िकट्टा चोर
उझट बात

एकतीस मार्च
अगिलह
स्वर्ग आ नर्क
पीरारक फड़
मनकेँ फुसलबै छी

बहिन
मर्माहत
अलपुरिया बरी
दुधियाएल बरखा
चोरूक्का झगड़ा

अकास दीप
माघ नहाइले जाएब
अतहतह
चौरचनक दही
तेतर भाइक कविता

त्राहि-कृष्ण
संकट
काँच सूत
बीरांगना : 2
सोग

अपन रोपल गाछी भुताहि
डभियाएल गाम
अखरा-दोखरा
गाछपर सँ खसला
सोनाक सुइत

विघटन
बगदल गाम
कलंक
उनटन
विद्रूताक मद

क्रान्तियोग
पाही पट्टी
गोहाइर
मरियाएल मन
मदैत नै चाही

बोनिहारिन मरनी
आशापर पानि पड़ल
बुढ़िया दादी
बाबी
बुधनी दादी : 1

क्रियाशील
समझौता
रत्न गमेवाक दुख
भाइक सिनेह
हारि

जाम
विदाइ-दैछना
टाइपिस्ट
गजपट खेती
सुआद

अनेरुआ बेटा
कछमछी
समदाही
वारंट
एकाग्रचित

गलगर भैंस
प्रवल इच्छा
अधखरूआ
मोहरा
भँसियाएल बाल-बोध

दूटा पाइ
अपने केलहा
समुद्री विद्या
बीरांगना : 1
अनुशासन

बिहरन
हारि-जीत : 1
अपसोच
अपन पुरखाक डीह
खलओदार

पढ़ल सुगा बौक
गेल माघ उनतीस दिन बाँकी
मान
बालमण्डली
नीक बोल

कियो ने
स्वरोजगार
झिसीक मजा
लतियाएल जिनगी
सजमनियाँ आम

त्रिकालदर्शी
सड़ल दारीम
बटखौक
स्मृति शेष
बिसवास

हाथी आ मूस
गामक बान्ह
पनचैती
भबडाह
दूरी

गामक मुँह फेर देखब
गुड़ा-खुद्दीक रोटी
चौकीदारी
देव उठान
अनदिना

सुमति
आशापर पानि फेर गेल
चर्मरोग
केतौ ने रहलौं
मुँह-कान

बाबाक बाग-बगिया
पुरस्कार
फुसियाह
गामक सुरता
कचोट

जेकर चुन तेकर पुन
एते दिन अपना-ले आब अनका-ले
रमैत जोगी बोहैत पानि
पनचैती पनपना गेल
जेठुआ गरदा

खसैत गाछ

केते लग केते दूर : 2

कुघाटक मृत्यु

ओऽ होऽ होऽ हूसि गेल

मुड़ियाएल घर

उचितवक्ता

हारि-जीत : 2

हँसीएमे उड़ि गेलौं

मनोरथ

धरती-अकास

विचार हेरा गेल

घर तोड़ि देलिऐ

आजुक जिनगीक आइ परीछा

दोहरी मारि

धुर बुड़ि तोरा बजै ने अबै छौ!

डकरा हाल

सीरक गाछ

परतीहा खढ़

गरदैन कट्टा बेटा

कर्जखौक

सुरता

सगहा

पकिया चेला

अनगढ़ चेतना

धोतीक मान

चुप्पा पाल

जन्मतिथि

दियरबा-भैंसुर

फज्झैत

भुतलग्गू आकि भविसलग्गू

सिरमा

मनुखदेवा

अप्पन-बीरान

सुभिमानी जिनगी

मरूभूमि

मइटुग्गर

आने जकाँ

उमकी

मुँहक खतियान

ओसार

सरोजनी

सुभद्रा

देखल दिन : 1

पड़ाइन

चास-बास दुनू गेल

बेटी हम अपराधी छी

भोलानाथ बाबा

घटक बाबा

इजोरिया राति

भँसैत नाह

शम्भुदास

शिवजीक डाक-बाक्

सजाए

छुटि गेल

कनफुसकी

फाँसी

गति-मुक्ति

बजन्ता-बुझन्ता

अप्पन हारि

कोसलिया

मुसहैन

बिसाँढ़

मत्हानि

तेरहो करम

बात-कथा सुनौलक

बेटीक पैरुख

गैत-वीध

बेवहारिक

ठका गेलौं

साए कच्छे

करिछौन लाली

बलजोर

गति-गुद्दा

कलम हानि कऽ

अकाल

भैंटक लावा

डंका

काल्हि दिन

इमानदार घूसखोर

सनेस : 1

५-५ टा कथाक १०० संग्रहक ई पंचदेव शृंखला मैथिलीमे पॉकेट-बुक्सक कमीकेँ पूर्ण करत। जतेक पन्ना, ततेक दाम, मोटामोटी दस-दस पन्नाक कथा। से पढ़ैयोमे सुभितगर आ कीनैयोमे सस्ता। एक उखड़ाहामे एकटा पॉकेट बुक्स खतम भऽ सकए, से साएगो पोथी साए उखड़ाहाक खोराकी भेल। श्री जगदीश प्रसाद मण्डलक कथा-संसारसँ बीछल ऐ सभ रचनाक विषय-वस्तु अहाँक सामाजिक ज्ञानकेँ मोनो पाड़त आ बढ़ेबो करत आ अहाँकेँ सामाजिक प्राणी हेबाक बोधो कराएत। अहाँकेँ अधिकारक संग कर्तव्यक स्मरण कराएत, सरोकारी बनाएत। आ ई सभ मनोरंजनक संग भेटत। मैथिलीक ई पहिल पॉकेट-बुक्स सीरीज स्वागत योग्य अछि। **-गजेन्द्र ठाकुर**

जगदीश प्रसाद मण्डलजीक रचना संसार : 1. गीतांजलि, 2. सुखाएल पोखरिक जाइठ, 3. तीन जेठ एगारहम माघ, 4. सरिता- गीत संग्रह। 5. इन्द्रधनुषी अकास, 6. राति-दिन, 7. सतबेध- कविता संग्रह। 8. पंचवटी- एकांकी संचयन। 9. मिथिलाक बेटी, 10. कम्प्रोमाइज, 11. झमेलिया बिआह, 12. रत्नाकर डकैत, 13. स्वयंवर-नाटक। 14. मौलाइल गाछक फूल, 15. उत्थान-पतन, 16. जिनगीक जीत, 17. जीवन-मरण, 18. जीवन संघर्ष, 19. नै धाड़ैए, 20. बड़की बहिन, 21. भादवक आठ अन्हार, 22. सधबा-विधवा, 23. ठूठ गाछ, 24. इज्जत गमा इज्जत बँचेलौं, 25. लहसन, 26. पंगु, 27.आमक गाछी- उपन्यास। 28. कल्याणी, 29. सतमाए, 30. समझौता, 31. तामक तमघैल, 32. बीरांगना- एकांकी। 33. तरेगन, 34. बजन्ता-बुझन्ता- बीहैन कथा संग्रह। 35. शंभुदास, 36. रटनी खढ़- दीर्घ कथा संग्रह। 37. गामक जिनगी, 38. अर्द्धांगिनी, 39. सतभैंया पोखैर, 40. गामक शकल-सूरत, 41. अपन मन अपन धन, 42. समरथाइक भूत, 43. अप्पन-बीरान, 44. बाल गोपाल, 45. भकमोड़, 46. उलबा चाउर, 47. पतझाड़, 48. लजबिजी, 49. उकड़ू समय, 50. मधुमाछी, 51. पसेनाक धरम, 52. गुड़ा-खुद्दीक रोटी, 53. फलहार, 54. खसैत गाछ, 55. एगच्छा आमक गाछ, 56. शुभचिन्तक, 57. गाछपर सँ खसला, 58. डभियाएल गाम, 59. गुलेती दास, 60. मुड़ियाएल घर, 61. बीरांगना, 62. स्मृति शेष, 63. बेटीक पैरुख, 64. क्रान्तियोग, 65. त्रिकालदर्शी, 66. पैंतीस साल पछुआ गेलौं, 67. दोहरी हाक, 68. सुभिमानी जिनगी, 69. देखल दिन, 70. गपक पियाहुल लोक, 71. दिवालीक दीप, 72. अप्पन गाम- लघु कथा संग्रह।

₹ 50

9789388421683

पल्लवी प्रकाशन
जे.एल.नेहरू मार्ग, तुलसी भवन
निर्मली, सुपौल, बिहार : 847452